॥ गोविन्दलहरी ॥

॥ प्रथमभाग ॥

जिस्में सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास, मीराबाई, देवस्वामी, विश्वरूप स्वामी, नारायण स्वामी इत्यादि अनेक प्रसिद्ध महात्माओं की बनाई हुई भजन, भैरवी, होली, घांटो, ठुमरी, रेखता, लावनी, मलार, ग़ज़ल, खेमटा, कजली और भी कई एक दूसरी आनन्ददायक चीजें हैं ।

जिस्को

सज्जनदासानुदास

लाला भोलानाथ महल्ला छोटी पियरी शहर बनारस ने पाठकों के चित्तविनोदार्थ संग्रह किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १८९९ ई० ।

3rd Edition 1500.] [Price 4 Annas.

॥ गोविन्दलहरी ॥



भैरवी ।

गणपति विघ्नविनाशनहारे। मङ्गलकरन अमङ्गलनासन सुख की सदन उमावरवारे॥ एकदन्त मुखगज लम्बोदर सेंदुर तिलक नयन रतनारे। महिमा अमित जपत सुर नर मुनि वेदविदित तें उदित उंजारे॥ शैलसुतासुत शैल नाम पर शैल समान हरहु दुख भारे। करि आनन्द कान

सुनि साँची मेरी अरज सुनहु चित धारे ॥ राम-सियापदपङ्कज बसिकै मम चित भृङ्ग टरै नहिँ टारे । सो वर देहु दास तुलसी कों राम सिया उर बसहिँ हमारे ॥ १ ॥

भैरवी ।

शङ्कर महादेव देव सेवक सुर जाके । भस्म अङ्ग सीस गङ्ग वाहन अति बल प्रचण्ड गौरी अरधङ्ग सङ्ग भङ्ग रङ्ग छाके ॥ लपटि झपटि जात व्याल ओढ़े तन मिरगछाल मुण्ड माल चन्द्र भाल दृग विशाल वाके । ध्यावत सुरनर सुरेश गावत गिरिजा गनेश पावत नहिं पार शेस ब्रह्म आदि थाके ॥ बरनत जन तुलसिदास गिरिजा-पति चरनआस ऐसे बरभेख नाथ भक्त हेतु राखे ॥

राग गौरी ।

श्रीरामचन्द्र कृपाल भजु मन हरण भवभय-दारुणं । नवकञ्जलोचन कञ्जमुख करकञ्ज पद-कञ्जारुणं ॥ कन्दर्प्प अगिणित अमित छवि नव नीलनीरजसुन्दरं । पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ सिर मुकट कुण्डल तिलक चारु उदारु अङ्ग विभूषणं । अजानुभुज

शरचाँपधर संग्रामजितखरदूषणं ॥ भजु दीन-बन्धुदिनेश दानवदैत्यबंशनिकन्दनं । रघुनन्द आनँनकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं॥ इति बदति तुलसीदास शङ्करशेषमुनिमनरञ्जनं । मम हृदय-कञ्ज निवास कुरु कामादि खलदलगञ्जनं ॥ ३ ॥

ठुमरी।

भजु मन रामचरन दिनराती । रसना कास न भजै तू हरिपद सुमिरत क्यौं अलसाती ॥ रा कै कहत दहत दुख दारुन सुनि जिय ताप बुझाती । पड़तै श्रवण सुजस रघुवर कै अति जुड़ात हिय छाती ॥ श्रोता सुमत सुशील सो हरि-जन देत सलाह सुहाती। रामचन्द्र कै नाम अमिय रस सो रस काहे न खाती ॥ सम्बत सोरह से इ-कतीसा जेठ सुदी छठ स्वाती । तुलसिदास इक बिनय लिखतु हैं प्रथम अरज की पाती ॥ ४ ॥

राग गौरी।

मन पछतैहै अवसर बीते। दुरलभ देंह पाइ हरिपद भजु करम बचन अरु ही ते॥ सहसबाहु दसबदन आदि न्टप बचे न कालबली ते । इम-हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते॥

सुत बनितादि जानु स्वारथरत मत करु नेह सभी ते। अन्तहुं तोहि तजैंगे पामर तू न तजहि अबहीते॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुरासा जी ते। बुझै न काम-अगिन तुलसी कहँ बिषय-भोगरस घी ते॥ ५॥

राग धनाश्री।

मेरो मन हरि जू हठ न तजै। निस दिन नाथ देउँ सिख बहुबिधि करत सुभाउ निजै॥ ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख उपजै। ह्वै अनुकूल बिसारि शूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै॥ लोलुप भ्रमत स्वान जिमि गृह गृह सिर पदत्रान बजै। तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग कबहुँ न मूढ़ लजै॥ हौं हार्यौं करि यतन बिबिधि बिधि अतिशय प्रबल अजै। तुलसिदास बस होय तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै॥६॥

राग॰धनाश्री।

जानकीजीवन की बलि जैहौं। चित कहै रामसियापद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं॥ उपजी उर प्रतीति सपनेहुं सुख प्रभुपद बिमुख न पैहौं। मन समेत या तन के बासिन्ह इहै सि-

खावन देहौं ॥ श्रवननि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं। रोकिहौं नैन बिलोकत औरहिं सीस ईसही नैहौं ॥ नातो नेह नाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं। यह छर भार त्यागि तुलसी जग सियबर दास कहैहौं ॥ ७ ॥

राग धनाश्री।

अबलौं नसानी अब न नसैहौं। रामकृपा भव निशा सिरानी जागेउ फिर न डसैहौं ॥ पायो नाम चारु चिन्तामणि उर कर तें न खसैहौं। स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी चित कञ्चनहिं कसैहौं। परवस जानि हँस्यो निज इन्द्रिन्ह इन बस ह्वै न हँसैहौं। मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहौं ॥ ८ ॥

राग कल्याण।

ऐसहि जन्मसमूह सिराने। प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल कीवल कलिमल-साने। सूखत बदन प्रशन्सत तिन्ह कहँ हरि ते अधिक करि माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर-करत न पाय पिराने। सदा मलीन पन्थ के जल

ज्यौं कबहुं न हृदय थिरानै ॥ यह दीनता दूरि करिबे कौं अमित यतन उर आनै । तुलसी चित चिन्ता न मिटै बिन चिन्तामणि पहिचानै ॥९॥

राग धनाश्री ।

सुनु मन मूढ़ सिखावनु मेरो । हरिपदविमुख न लह्यौ काहु सुख सठ यह समुझ सबेरो ॥ बिछुरे ससि रवि मन नयननि तें पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमित निसि दिवस गगन महँ तहँ रिपु-राहु बड़ेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुजस घनेरो । तजी चरन अजहूँ न मिटत नित बाहिबो ताहू केरो ॥ छुटै न बिपति भजी बिनु रघुपति श्रुति सन्देह निबेरो । तुलसिदास सब आस छाड़ि कर होहु राम कर चेरो ॥१०॥

राग बिलावल ।

रहौ भवन हमरे कहै कामिनि । सादर सासु चरण सेवहु नित जो तुम्हरे अति हित गृह स्वामिनि ॥ राजकुमारि कठिन कण्टक मग किमि चलिहौ मृदुपद गजगामिनि । दुसह बात वर्षा हिम आतप कास सहिहौ अगणित दिन यामिनि ॥ हौं पुनि पितुअज्ञा प्रमाण करि ऐहौं बेगि

सुनी द्युति दामिनि। तुलसिदास प्रभु बिरहबचन सुनि सुधि न रही मुरछित भइ भामिनि॥ ११॥

राग बिलावल।

कृपानिधान सुजान प्रानपति सङ्ग विपिन ह्वौ जावोंगी। गृह ते कोटि गुणित सुख मारग चलत साथ सचु पावोंगी॥ थाके चरणकमल चाँपोंगी श्रम भये वाय डुलावोंगी। नयन चकोरनि सुखमयछबि सादर पान करावोंगी॥ जौ हठि नाथ राखिहौ मोकहँ तौ सङ्ग प्रान पठावोंगी। तुलसिदास प्रभु विनु जीवत रहि फिरि क्यौं बदन दिखावोंगी॥ १२॥

राग बिलावल।

फिरि २ राम सिया-तन हेरत। तृषित जानि जल लेन लखन गये भुज उठाय ऊँचे चढ़ि टेरत॥ अवनि कुरंग बिहँग द्रुमडारनि रूप निहारत पलक न प्रेरत। मगन न डरत निरखि कर-कमलनि सुभग सरासन फेरत॥ अवलोकत मग-लोग चहूँ दिशि मनहुँ चकोर चंद्रमहि हेरत। ते जन भूरि-भाग भूतल पर तुलसी राम-पथिक-पद जे रत॥ १३॥

राग सारङ्ग।

सुनहु भरत दै कान सुयस हनुमान को ॥ गिरि सुमेर पर्वत के ऊपर सयन करन लागे दोउ भाई। चहुंदिसि घेर लँगूर बीर बैठे फह- राई ॥ चौकी कठिन कपीस की जहँ पवनो को गम नाहिं। ऐसो बीर कौन मारग से हयो नृ- पति छन माहिं ॥ सुनहु भरत दै कान० ॥१॥

सारी रैन गइ बीत होत लोहे पैठारी। भ- यउ किलकिला शब्द खुली बीरन की तारी ॥ चिहुंकि उठे सुतपौन जब आसन देखि सून। च- कित भये मुख बात न आवै भये लज्जित दुख दून ॥ सुनहु भरत दै कान सु० ॥ २ ॥

कोप्यो पौनकुमार आज नभ नख ते फारों। ससि मेलों भण्डार इन्द्र ते उन्द्र पवारों ॥ सपथ करों रघुनाथ की जन्यों अञ्जनी नाहिं। तीनो लोक बिलोकि बिलोकों प्रलै करों छन माहिं ॥ सुनहु भरत दै कान सु० ॥ ३ ॥

डोलि मेरु सुमेरु श्रवन सुनि सेस सकाने। सहि न सकि सिर भार आजु बलवान रिसाने ॥ कम्पित भे सब देवता मारग दीन बताहिं। प-

टकि लँगूर वीर तब कूद्यौ पैठि पतालहि जाहिं॥
सुनहु भरत दै कान सु० ॥ ४ ॥

देख्यौ नगर अनूप भूप घर बजत बधाई । यमकातर यमदूत नृपति हारे घहराई ॥ माया देवी टारिकै बैठे बदन छिपाहिं । फल पकवान और सब मेवा प्रगट आपुही खाहिं ॥ सुन०॥५॥

बलि देने को चल्यो कुँअर दीनो नहवाई । चन्दन अगर सुगन्ध कुमकुमा अङ्ग लगाई ॥ खड्ग काढ़ि ऐसी कही सुमिर आपनो नाथ । एहि अवसर तोहि आनि उबारे नाहिं हतौं दोउ माथ॥
सुनहु भरत दै कान सु० ॥ ६ ॥

रामचन्द्र गुरु सुमिरि पिता चरनन चित लाई । कौशिल्या को धर्म सुमिरि हिरदय गुन गाई ॥ औ सुमिर्यौ हनुमान कों आवैं गाढ़े काम । असुरबिदारन सन्तनतारन मारुतसुत है नाम ॥ सुनहु भरत दै कान सुयस० ॥ ७ ॥

प्रगट्यो पवनकुमार मेघ धुनि गरज सुनायो । असुरन दलमल कीन्ह गर्भिनी गर्भ नसायो ॥ मार्यौ असुर पछारि कै नाद बज्र सम कीन । क-

धिरन की सरिता बही हाड़ मास भये हीन ॥
सुनहु भरत दै कान सु० ॥ ८ ॥
महिरावन वध कीन्ह राम कटकहिं लै आयो। जै जै तीनो लोक सुयस सनकादिक गायो ॥ साहब सीताराम के तुलसी अमर अजीत। जो यहि पद निरभय ह्वै गावै परम हमारो मीत ॥ सुनहु भरत दै कान सुयस हनुमान को ॥ ६ ॥

राग गुर्जरी।

रे मन मूरख जनम गँवायो। करि अभिमान विषय सों राचेउ श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह सन्सार फूल सेमर को सुन्दर देखि लुभायो। चाखन लाग्यो रूई उड़ि गई हाथ कछू नहीं आयो॥ कहा भयो अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो। सूरदास भगवन्त भजन बिनु सिर धुनि धुनि पछितायो ।॥ १५ ॥

राग टोड़ी।

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै। गुरु के बचन अटल करि मानहु सन्त समागम कीजै ॥ पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै ॥ कृष्ण नाम बिनु जन्म बादिही वृथा

जिवन कह जीजै ॥ कृष्णनाम-रस बहेउ जातु है तृषावन्त ह्वै पीजै । सूरदास हरिशरण ताकिये जनम सुफल करि लीजै ॥ १६ ॥

राग धनाश्री।

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं । अपने सुख को सब जग बांध्यौ कोउ काहू को नाहीं ॥ सुख में आय सबै मिलि बैठत रहत चहूं दिसि घेरे । बिपति परे तब सब सँग छाड़ें कोउ न आवे नेरे ॥ घर की नारि बहुत हित जासों रहत सदा सँग लागी । जब हून हन्स तजी यह काया प्रेत २ कहि भागी ॥ या विधि की व्यौपार बन्यौ जग तासो नेह लगायो । सूरदास भगवन्त भजन बिनु नाहक जनम गँवायो ॥ १७ ॥

राग सारङ्ग।

छाडु मन हरि-बिमुखन को सङ्ग । कहा भयो पय पान कराये बिष नहिं तजत भुजङ्ग ॥ जाकि सङ्ग कुबुद्धी उपजि परत भजन में भङ्ग । काम क्रोध मद लोभ मोह में निसि दिन रहत उमङ्ग ॥ कागहि कहा कपूर खवाये स्वान न्हवाये गङ्ग । खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भू-

षन अङ्ग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निषङ्ग। सूरदास खल कारी कामरि चढ़त न दूजो रङ्ग ॥ १८ ॥

राग देवगन्धार।

मेरे जिय ऐसी आय बनी । छाड़ि गोपाल और जो सुमिरों तो लाजै जननी ॥ विष को मेरु कहा ले कीजे अमृत एक कनी । मन क्रम बचन और नहिं चितवों जब कब श्याम धनी ॥ कह ले करों कांच को संग्रह छाड़ि अमोलमनी। सूरदास भगवन्तभजन बिनु तजो जात अपनी ॥

सारङ्ग।

भजन बिन जीवत है जस प्रेत । मलिन मन्दमति डोलत घर घर उदर भरन के हेत ॥ मुख कटुवचन बकत नित निन्दा सुजन सुखे दुख देत । कबहुं पाप के पावत पैसा गाड़ि धूरि महँ देत ॥ गुरु ब्राह्मण अच्युतजन सज्जन जात न कबहुं निकेत । सेवा नाहिं गुबिन्दचरण की भवन नील को खेत ॥ कथा नहीं गुण गीत सुयश हरि साधन देव अनेत । रसना सूर बिगारे कहँ लों बूड़त कुटुम समेत ॥ २० ॥

राग धनाश्री ।

भक्ति कब करिहो जनम सिरानो । कोटि यतन कीने माया को तबौ न मुग्ध अघानो ॥ बालापन खेलतही खोयो तरुण भये गरबानो । काम करोध लोभ के बल हरि चेल्यो नाहिं अयानो ॥ बृद्ध भये कफ कण्ठ बिरूँध्यो सिर धुनि धुनि पछितानो । सूर श्याम के नेक बिलोकत भवनिधि जाय तिरानो ॥ २१ ॥

राग कान्हरा ।

सोइ रसना जो हरिगुन गावै । नैनन की छबि यहै चतुरता सोइ मुकुन्दमकरन्दहिं धावै ॥ निर्मल चित तौ सोई साँचो कृष्ण बिना जिहिँ और न भावै । श्रवनन की जु यहै अधिकाई हरि-यश नित प्रति श्रवन अँचावै ॥ कर तेई जु श्याम कौं सेवैं चरननि चलि बृन्दावन धावै॥ सूरजदास कहै बलि ताकी जो सन्तनि सौं प्रीति बढ़ावै ॥

राग धनाश्री ।

कबहूं नाहिंन गहरु कियो । सदा सुभाव सुलभ सुमिरनवश भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपीजन कारन गिरि कर-कमल लियो ।

अघ अरिष्ट केसी काली मथि दावा अनल पियो॥ कंशवंश वधि जरासिन्धु हति गुरुसुत आनि दियो। करषत सभा द्रुपदतनया को अम्बर आनि छियो॥ काके शरण जाऊँ यदुनन्दन नाहिन और बियो। सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणामृदुलहियो॥ २३॥

राग धनाश्री।

सबै दिन गये विषय के हेत। देखतही आपनपौ खोयो केस भये सब स्वेत॥ रुंध्यो स्वास मुख बैन न आवत जैसे चन्द्र गह्यो सिर केत। तजि गङ्गोदक पियत कूपजल पूजत हारे प्रेत॥ करि प्रमोद गोविन्द बिसारे बूड्यो सबनि समेत। सूरदास कछु खरच न लागत कृष्ण सुमिर किन लेत॥ २४॥

राग नट।

हैं प्रभु मोहूँ ते अति पापी?। घातक कुटिल चवाई कपटी मोह क्रोध सन्तापी॥ लम्पट धूत पूत दमरी के विषय-जाप नित जापी। कामबिबश कामिनिहीं के रस हठ करि मनसा थापी॥ भक्ष अभक्ष अपय पीवन को लोभ ला-

खसा धापी। मन क्रम बचन दुसह सबहिन सों कटुक बचन आलापी ॥ जीते अधम उधारे प्रभु तुम हौं तिन की गति मापी । सागर सूर बिकार-भरी-जल बधिक अजामिल बापी ॥ २५ ॥

राग धनाश्री ।

मोसों पतित न और हरे। जानत हौ प्रभु अन्तर्यामी जो मैं काज करे ॥ ऐसो अन्ध अधम अबिबेकी खोटनि करत खरे। विषयी भजे विरक्तन सेये मन धन धाम धरे॥ ज्यों माखी मृगमद मण्डित तन परहरि पूय्य परे। त्यों २ मूढ़ विषय-गुञ्जा गहि चिन्तामणि बिसरे ॥ कूबरि कह्यौ पखण्ड कामबस भूप भवन निसरे । एकै द्वहै जानि अवलम्बन वेसहि पतित बरे॥ हारे त्रास करत यमकिङ्कर सुनि मम नाम डरे । सूर पतित तुम पतितउधारन विरद कि लाज बरे॥ २६ ॥

राग सोरठ।

पूतना विष दे अमृत पायो । जोइ २ देयत सोइ फल पैयत नाहक बेदन गायो ॥ कोटि गऊ राजा नृग दीनी सो कृमि ह्वै जग जायो।

तनक सुगन्ध लगाय कूबरी सुख लूट्यौ मनभायो ॥ सहस यज्ञ राजा बलि कीनो बाँधि पताल पठायो । जन्म रङ्क द्विज दीन सुदामा निज सम पुरी बसायो ॥ सहस गालि सिसुपाल दिये प्रभु कोटि कलङ्क लगायो । तजि औगुन यदुनाथ सूर प्रभु निजहि स्वरूप मिलायो ॥ २७ ॥

राग सोरठ।

राखो पत गिरवर गिरिधारी । अब तो नाथ रह्यो कछु नाहीं उघरे माथ अनाथ पुकारी ॥ रथबिहीन पाण्डवसुत डोले भीम गदा कर सों महि डारी । थाको पैज प्रबल पारथ को तापै धरनि धरमसुत हारी ॥ बैठे सूर-सुभाय सुभट सब भीषम द्रोन करण ब्रतधारी । कहि न सकत कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत बिचारी ॥ लाज गँवाय दास दासिन की तब का करिहो आय मुरारी । सूरदास लज्जा अब राखो पुनि पछितैहो नगन निहारी ॥ २८ ॥

लावनी।

बिन काज आज महराज लाज गइ मेरी । दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ दुस्सासन

बंशकुठार महा दुखदाई । कर पकरत मेरी चीर दया नहिं आई ॥ अब हुआ धरम का नाश पाप रहा छाई । लखि अधम सभा की ओर नारि बिलखाई॥ शकुनी दुर्योधन करन खड़े खल घेरी । दुख हरो द्वारिकानाथ शरन मैं तेरी ॥१॥

तुम दीनन की सुधि लेत देवकीनन्दन । महिमा अनन्त भगवान भक्तदुखभञ्जन ॥ तुम किया सियादुख दूर शम्भु धनु खण्डन। प्रभु आरतिहरन गुपाल मुनिन-मनरञ्जन ॥ करुनानिधान भगवान करो क्यों देरी। दुख हरो० ॥ २ ॥

तुम पत राखी प्रह्लाद दीन दुख टारे। भये खम्भ फारि नरसिंह असुर संहारे ॥ व्रज खेलत केसी आदि बकासुर मारे। मुष्टिक चँडूर औ कंस के मस्तक फारे॥ तुम मातु पिता की जाय कटाई बेरी । दुख हरो द्वारिकानाथ श० ॥ ३ ॥

लिये भक्तन हित औतार कन्हाई तुमने । नल कूबर की जड़ जोनि छुड़ाई तुमने ॥ कियो इन्द्रकोप प्रभुता दिखराई तुमने। जल बूड़त व्रजबनितानि बचाई तुमने ॥ अब बिलम करो

क्यों प्रभो हमारी बेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरन मैं तेरी॥ ५॥

सुनि गजइन्दर की टेर विष्णु अबिनासी। ग्रह मारि छुड़ाई जाय दास की फ़ाँसी॥ मैं धरों तुम्हारो ध्यान द्वारिकाबासी। प्रभु काहे राज-समाज करावत हाँसी॥ मैं दीन दुखी असहाय बिपति में घेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ श०॥५॥

सब बैठे राजसमाज नीत निज खोई। नहिं कहै धरम की बात सभा में कोई॥ पाँचो पति बैठे मौन कौन गति होई। लै नन्दनँदन को नाम द्रोपदी रोई॥ करि २ बिलाप सन्ताप सभा में टेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ श० ॥६॥

सुनि दीन बचन भगवान भक्तहितकारी। हरि भये चीर में प्रगट हर्यो दुख भारी॥ खैंचत हारे मतिमन्द बीर बलकारी। रख लई दीन की लाज आप बनवारी॥ सुर हरषत बरषत सुमन बजावत भेरी। दुख हरो०॥ ७॥

अस करी द्वारिकानाथ मनोहर माया। अम्बर को लाग्यो ढेर अन्त नहिं पाया॥ तिहुं

लोक चतुरदश नभव चीर दरसाया। लघुमति गनेसपरसाद कृष्णगुन गाया ॥ दीनन के दीनानाथ बिपति निरबेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरन मैं तेरी॥ ८॥ २९॥

प्रभाती।

अन्नपूर्णा आदि भवानी मैया बन्दत हौं पद तोर। ललित लाल मृदु जिनके तरवा नख दुति करत अँजोर ॥ गोरे तन पर सूहा सोहै सुधा भरी दृग कोर। हेमरतनमय चुरियां दोउ कर मुख जनु चन्द्र किरोर॥ कर करछी तिरछी कंचन की चितय रही चहुँओर। अन्न देत कासीबासिन को त्रिभुवन में यह सोर ॥ भर माथे कुंकुम छवि राजित उदय भानु जनु भोर। देवदेव की रानी कीजे सुफल मनोरथ मोर ॥३०॥

राग धनाश्री।

कबहुं न सियबर के गुन गाये। झूठी आस जगत में फँसि २ बिरथा जनम गँवाये ॥ धनवन्तन को देखि लोभवस निज सरूप बिसराये। कूकर सों टुकड़ा के कारन पुनि २ पूंछ हिलाये॥ खिलत खात हँसत औ बोलत चौथौ पन निय-

रायें। बीसो बिसवा मरन होइगो जानिहुं के बौराये ॥ श्रीगुरुदया सङ्ग सज्जन की इनकी बिना सहाये । देवचरनरति कैसे उपजै साधहु कोटि उपाये ॥ ३१ ॥

राग भैरव।

समुझ बूझ जिय में बन्दे क्या करना है क्या करता है। गुन का मालिक आपै बनता दोष राम पर धरता है ॥ अपना धरम छोड़ि औरों के ओछे धरम पकरता है। अजब नशे की गफ़लत आई साहिब कों नहिं डरता है॥ जिनके ख़ातिर जान माल से वहि २ के तूँ मरता है। वे क्या तेरे काम पड़ैंगे उनका लहना भरता है॥ देव धरम चाहै सो कर ले आवागवन न टरता है। प्यारे केवल राम नाम से तेरा मतलब सरता है ॥ ३२ ॥

काफी।

कोइ सफ़ा न देखा दिल का, साँचा बना झिलमिल का ॥ कोइ बकुला कोइ बिल्ली देखा पहिरे फ़कीरी खिलका। बाहर मुख से ज्ञान छाँटते भीतर काला छिलका ॥ राम-भजन में

परम आलसी जैसे मरा मँजिल का। औरनकी पीसन में सुरवा पटतर लोढ़ा सिल का॥ पढ़े गुने कुछ ऐसे वैसे बड़ा घमण्ड अकिल का। ज़हरी सखुने मुख सी निकलें मसल साँप के बिल का॥ रामलगन बिन जप तप झूठा, झूठा आस फ़ाज़िल का॥ क्या कहिये गुरुदेव न पाया महरम आँख के तिल का॥ ३३॥

रेख़ता।

दिल से गई न शेख़ी मूँड़ क्या मुड़ाया। हैवानही बना है इन्सान क्या कहाया॥ कण्ठी गले में बाँधी छापा तिलक लगाया। यह तो सभी नक़ल है इसका असल न पाया॥ सोहबत मिली न उसकी जिसने असल कमाया। सोहबत मिली चटोरी अपना रतन गँवाया॥ तूं साँच मान एती को तूँ कहां से आया। क्योंकर जहाँ अजूबा किस देव ने बनाया॥ ३४॥

राग धनाश्री।

कबहुँ न अपने सुख सों सोये। धन धन्धा के घेरि घारि में मानिक सों तन खोये॥ नाते आइ मिले जित तित ते ना हित को हम को ये। बिना

गरज के काको पूछत भली भांति टकटोये ॥ कौड़ी कारन द्वार द्वार फिरि नीचन कों मुख जोये। जनम २ निज करन घास के बोझे सिर पर ढोये ॥ देव सरित सों सन्त-समागम तहाँ न मन-मल धोये। रामलगन विनु अन्त समय में माथ हाथ धरि रोये ॥ ३५ ॥

राग मलार।

लगन मैं कासों राम लगाऊँ। कोइ दिल-दार न पाऊँ ॥ चौदह अनरथ देखि अरथ में तासों मनहिं हटाऊँ। रहौ कि जाउ अरथ कि-समत सों हरष न सोच बढ़ाऊँ ॥ असन बसन भूषन भोगन तें छिन २ तियहि बुझाऊँ। इन बिन कामिन बात न पूछै अपनों भरम गँवाऊँ॥ अतर सुगन्ध देउँ जिहि तन को नित मलि २ नहवाऊँ। सोऊ सङ्ग चलत नहिं मेरे अब प्रिय केहि ठहराऊँ॥ जाकें नाते सब प्रिय लागे जा बिन मृतक कहाऊँ। सोई देव सियावर मेरो ताको गाय रिझाऊँ ॥ ३६ ॥

कहरवा।

मैं तोसे किछु पूछउँ सुँदरिया। को इनवे

की कसबिन बनवे की तैं झूठ साच के छन-की लालन के रङ्गन सनवे जगमग पहिरि चुँ-दरिया ॥१॥ की जस लाभ पुजावन कारन की चाहसि तैं सरग सँवारन की तैं करवे जगत उ-धारन खनहन पहिरि मुँदरिया ॥ २ ॥ की ठग दम्भी झूठ ठाट के की केउ मुनियां राजपाट को की केउ भेदी स्यामघाट को भेटल तोहि हुँद-रिया ॥३॥ की रहवे तैं कोट महल में की रहवे तैं साधु टहल में की रहवे तैं देव अहल में लखि कै प्रेम बुँदरिया ॥ ४ ॥ ३७ ॥

कहरवा।

सुघर तब बोली सुंदरिया। हुनी लालची चटनी चाटउ साचऽसाच के कूकुरि काटउ मैं लालन के रंगै साटउ नरकै पहिरि चुँदरिया॥१॥ तरसलि होइ से लेउ पुजावउ गिरइ चहै से सरग भुजावउ मैं तौ चाहौं आपन पदवा खन-हन पहिरि मुँदरिया ॥२॥ दम्भी के मुँह कारिख लागौ मुनियां मङ्गन प्रभु से मागौ मोहि तौ भेटल स्यामघाट के भेदी लाल हुँदरिया ॥ ३ ॥ चौरासी कर भेद न जागेउ साधु टहल में मन

अब पागेउ मैं तो रहवेउँ देव अहल में लखि कै प्रेम बुँदरिया ॥ ४ ॥ ३८ ॥

कहरवा।

जगत गुरु मोर मैं चटिया ॥ सकल पदारथ खोलि दिखावत गइलि भरम कै टटिया। आपुइ ते तब सूझइ लागलि स्याम मिलन कै बटिया ॥ भौसागर के मछरी जियरा परलि मोह कै कटिया। विषै जाल में नइकै बाझै सोझ न चलै कपटिया ॥ केऊ छतीसा केऊ बतीसा रङ्ग बिरङ्गी हटिया। छानि छूनि कै गुरू पढ़ावलि स्याम नाम कै पटिया ॥ कुञ्जनिकुञ्ज देवकीनन्दन औ राधा कै सटिया। दुऔ लहरियन के लहरन में सँवरि जात भलि मटिया ॥ ३९ ॥

भैरवी।

दिवाने तू सियाबर सों न सटा, कहा बढ़ाये सिर जटा ॥ मोतीझालर-रतन खम्भ से बिरची ऊँची अटा। एक दिवस तू इनको तजि कै जावैगा चटपटा ॥ कहा भये कुलकटा भये तें कहा भये कनफटा। राम राम रटि जो नहिं बन्दे परमारथ रस चटा ॥ ज्ञान सीख के आप

ब्रह्म भा विषयन सों नहिं हटा । छिन ऊपर छिन नीचे दौरत जैसे नट को बटा ॥ इन्द्रादिक देवन में जाको रतो २ की छटा । ताको निरखि मोर मन हरषत जस सावन घन-घटा ॥

भैरवी ।

चीखि २ चसकन सों रामसुधा पीजिये । रामचरित-सागर में रोम २ भीजिये ॥ राग द्वेष जग बढ़ाय काहे को कीजिये । पर दुखकन देखतही आप सों पसीजिये ॥ तोरि तारि खींचि खाँचि श्रुति को न गींजिये । जामें रस बनो रहे सोई अर्थ कीजिये ॥ बहुत काल सन्तन की दोउ चरन मीजिये । देव दृष्टि पाय विमल जुगजुग लों जीजिये ॥ ४१ ॥

कबीर के शब्द ।

पिया ऊँची रे अँटरिया तोरी देखन चली ॥ ऊँची अँटरिया जरद किनरिया लगी नाम की डोरिया । चाँद सुरज सम दियना बरतु है ता बिच भूली डगरिया ॥ पाँच पचीस तीन घर बनियाँ मनुआँ है चौधिरिया । मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को चहुँदिसि लागी बजरिया ॥ आठ म-

हातम दस दरवाजा नौ मे लागी केवरिया। खिरकी बैठि गोरी चितवन लागी उपरौं झाँप झोपरिया॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो गुरु की चरन बलिहरिया। साधु सन्त मिलि सौदा करिहैं झंखे मुरुख अनरिया॥ ४२॥

शब्द २

कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो। चँदन काठ कै बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो॥ उठोरी सखी मोरी माँग सँवारो कोइ दुलहिन मोसे रूसल हो। आये यमराज पलँग चढ़ि बैठे नैनन आँसू टूटल हो॥ चार जने मिलि खाट उठाइन चहुंदिसि धूंधू उठल हो। कहत कबीर सुनो भाई साधो जग से नाता छूटल हो॥

शब्द ३

देखि २ जिय अजरज होई। यह पद बूझै बिरला कोई। धरती उलटि अकासहि जाई। चौंटी कै मुख हसति समाई॥ बिन पवनहिं जहँा परबत उड़ैं। जीव जन्तु सब बिरछा बूड़ैं॥ सूखे सरवर उठे हिलोला। बिनु जल चकवा करै कलोला॥ बैठा पण्डित पढ़े पुराना। बिन देखे

का कारे बखाना ॥ कह कबीर जो पद को जाने। सोई सन्त सदा परमाने ॥ ४४ ॥

शब्द ४

साईं के सँग सासुर आई। संग न सूती स्वाद न जान्यौ गयौ योवन सपने की नाई ॥ जना चारि मिलि लगन सोचाई, जना पाँच मिलि मण्डप छाई। सखी सहेली मङ्गल गावैं दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई ॥ नाना रूप परी मन भाँवरि गाँठी जोरि भई पति आई । अरघे दैदै चली सुबासिनि चौकहि राँड़ भई सँग साईं ॥ भयो बिवाह चली बिन दूलह बाट जात समधी समुझाई। कह कबीर हम गौने जैबे तरब कन्त ले तूर बजाई ॥ ४५ ॥

शब्द ५

सन्तो अचरज भो इक भारी । पुत्र धरल महतारी ॥ पिता के संगहि भई बावरी कन्या रहल कुमारी। खसमहि छाड़ि ससुर सँग गवनी सो किन लेहु विचारी ॥ भाई सङ्ग सासुरी गवनी सासु सौतिया दीन्हा। ननद भौजि परपञ्च रच्यौ है मोर नाम कहि लीन्हा ॥ समधी

के सँग नाहीं आई सहज भई घरबारी। कहहि कबीर सुनो हो सन्तो पुरुष जनम भो नारी ॥

शब्द ६

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी । नारी एक पुरुष दुइ जाये बूझो पण्डित ज्ञानी ॥ पाहन फोरि गङ्ग इक निकरी चहुँदिसि पानी पानी। तेहि पानी दुइ परवत बूड़े दरिया लहरि समानी ॥ उड़ि मक्खी तरुवर के लागी बोलै एकै बानी। वहि मक्खी के मक्खा नाहीं गरभ रहा बिन पानी॥ नारी सकल पुरुष वहि खायो ताते रही अकेला। कहै कबीर जो अबकी बूझै सोइ गुरू हम चेला ॥ ४७ ॥

शब्द ७

सन्तो बोले ते जग मारै। अनबोले ते कैसे बनिहै शब्दहि कोइ न बिचारै ॥ पहिले जनम पूत को भयउ बाप जनमिया पाछे। बाप पूत की एकै माया ई अचरज को काछे ॥ उँदुर राजा टीका बैठे बिषहर करै खवासी। स्वान बापुरा धरनि ठाकुनी बिल्ली घर में दासी ॥ कागजकार कार कुड़ आगे बैल करै पटवारी । कहहि क-

बीर सुनो हो सन्तो भैंसहि न्याव निवारी ॥४८॥

ठुमरी।

माई मैं तो गोबिंद सों अटकी। चकित भये हैं दृग दोउ मेरे लखि शोभा नट की॥ शोभा अंग अंग प्रति भूषन बनमाला तट की। मोर मकुट कटि किङ्किनि राजै दुति दामिनि पट की॥ रमित भई हौं साँवर के संग लोग कहैं भटकी। छुटी लाज कुलकानि लोग डर रहौं न घर हटकी॥ मीरा प्रभु के संग फिरैगी कुञ्ज कुञ्ज लटकी। बिना गोपाल लाल बिन सजनी को जाने घट की ॥ ४९ ॥

लावनी।

पापी रसना रट राम सिया दिन राती। माया ममता में उमर खतम हुइ जाती॥ ये कहैं पुकार २ सुनो सब प्यारे। भजु राम नाम दुनियां से होकर न्यारे॥ जो राम कहै सो दोनों लोक सँवारे। जो नहीं कहैं वे पड़ते नरक मझारे॥ ज्यों २ बीते दिन मीत चली नगिचाती। माया ममता में उमर खतम हुइ जाती॥ १॥

निज धरम करै औ करै साधु की सेवा। है

दुनियां में यह सब से मीठा मेवा ॥ चित लाय भजै रघुनाथ और सब देवा । धन उनको जिनने निज पार लगाया खेवा ॥ यह जीव है जैसे अलग तेल से बाती । माया ममता० ॥ २ ॥

सब समुझ लेहु यह चन्द रोज की काया । है दुनियाँ दौलत भरमाने की माया ॥ रख प्रीति मुहब्बत कर सब पर सठ दाया । इस जगत जाल में क्या फिरता भरमाया ॥ कर पुन्य धरम की ध्वजा रहै फहराती । माया म० ॥ ३ ॥

भजते हैं जो दिन रात बने मस्ताने । वे परब्रह्म का भेद भी कुछ पहिचाने ॥ हे नाथ राम परताप तुम्हीं को जाने । सब छोड़ के तेरे चरनों में लिपटाने ॥ कर पुन्य पाप का कोई नहीं संघाती । माया ममता में उमर खतम हुइ जाती ॥ ४ ॥ ५० ॥

प्रभाती ।

है जगसार बिचार यही शिव नाम जपो दिन राती रे । जनम मरन दुख छूटि जाय तब तीनों ताप नसाती रे ॥ ज्ञानी सोई सुसील जगत में देत सलाह सुहाती रे । गौरीपति के भजन

बिना यह बयस वृथा सब जाती रे॥ शिवपद बिमुख मनुज जग में ते जानहु आतमघाती रे॥ नरक परे पछितात सदा यमगण मारत घन छाती रे॥ देबिसहाय समाय रह्यो शिव प्रेम नेम बहु भाँती रे। हृदय बिमल में देखि परैं शिव चरणकमल नख पाँती रे॥ ५१॥

देस।

सोच ना करो रे मनमें भोला देनेवाला है। गौरी अरधङ्गा जाके भङ्गा को अहारा है। हाथ में पिनाक लीन्हें सोई बैलवाला है॥ गोरी सो सरीर जाको और कण्ठ काला है। सोई अवधूत मेरा मोहि प्रतिपाला है॥ महा बिष पान कीन्हे नैन जाके लाला है। दुष्टन के नासिबे को तीजे नैन ज्वाला है॥ देवी को सहाय तेरा सेवक निराला है। वोही मेरा स्वामी जाके गले मुण्डमाला है॥ ५२॥

प्रभाती।

पतितशिरोमणि नाम हमारो॥ कबहुं न ध्यान धरत उर अन्तर कबहुँ न नाम उचारो। कबहुँ न सुजस सुनत शङ्कर को लगत कुसंग

पियारो ॥ कबहुँ न सन्तचरन करि सेवा नहिं निज पाप निकारो। देवीसहाय दास अपने को अबकी बेर उबारो ॥ ५३ ॥

सिन्ध भैरवी।

ऐसही बितैहौ कि चितैहौ चित लाय कै ॥ तात मातु मेरे शम्भु कहौं मैं रिसाय कै। सरन तिहारे आयौं कासौं कहौं जाय कै ॥ दीन के दयालु मेरी दीनता मिटाय कै। सुख को समूह दीजै दरस अघाय कै ॥ आपनो समुझि मोको लीजै अपनाय कै। जननी हमारी अम्ब कहौं मैं बुझाय कै ॥ देवी को सहाय सदा नाम कहै गाय कै। काशीवास दीजै स्वामी बेगही बुलायकै ॥

प्रभाती।

हौं कपूत निज पूत तिहारो अन्नपूरणे माई री। तेरी कृपा कटाच्छ किये ते मेरी सब बनि जाई री ॥ काशीपुरी सकल जगपावनि भूमि से भिन्न बनाई री। जमपुर जीव जान नहिं पावैं जहँ तेरी ठकुराई री ॥ भागीरथी और रवितनया सारद सङ्ग लवाई री। तुव पुर को प्रताप लखि जननी बास कियो तहँ आई री ॥ अघि-

मादिक सब अन्न मधुर लै करत फिरत पहुनाई री। सुरदुर्लभ सुख देत सबन को अन्त मोच पद पाई री॥ आनद मगन सुमन सुर बरखैं बाजत गगन बधाई री। दस अरु चार भुवन चौधो से शोभा अति अधिकाई री॥ दरसन से अघ दूर होत हैं कवि बरनत सकुचाई री। आप पियारे पास बसाये हमैं दियो बिसराई री॥ गो द्विज दुखित देखि जब जननी तब तुम करत सहाई री। भवसागर तारण को तरणी पुरी पुनीत बनाई री॥ देविसहाय असी करुणा विच मो मन रह्यो समाई री। तेरे चरणकमल-नख निरखत शोकसमूह नसाई री॥ ५५॥

भैरवी।

जय जय जय जय शम्भु कृपालं॥ गोसुत वाहन सङ्ग सती है पञ्चानन त्रय नेत्र विशालं। गङ्गधार सिर जटा विराजै नीलकण्ठ ओढ़े मृगछालं॥ गौर शरीर सुछीनफेन सम पहिरे माला मनुज कपालं। मरघट भस्म विराजै तन में तिलक चन्द्रमा सोहत भालं॥ झलकत पद्म च-

रण शङ्कर की लटकत हार हिये में व्यालं । गहि त्रिशूल बजावैं डौंरू बने दिगम्बर रूप करालं ॥ साथ योगिनी भैरो नाचैं प्रेत पिशाच बजावत तालं । खूबचन्द रत देव शम्भुपद शत्रु मनोभव होहु दयालं ॥ ५६ ॥

परज ।

बौरे मन हर भजु दम पर दम, सुनि सुनि के नाम काँपत अति जम । हरहर रटत जरत सब सङ्कट बढ़त तेज चमकत चमचम । दीन प्रीति उपजतु है उर मैं छूटि जात सगरौ हम हम । अरधङ्गी छवि अधिक सोहावन करत नृत्य सुन्दर छमछम । जटा जूट में गङ्ग विराजे कर बाजे डमरू डमडम । छाड़ि कपट छल औ चतुराई करहु प्रेम नित नेम धरम । मुहि सम पतित अनेकन तारे नाम लेत तरिजात अधम । होहु दयाल कृपाल 'निजामी' राखि लेहु मेरि लाज सरम ॥ ५७ ॥

खम्माच ।

कैलाशपती महराजराज, शङ्कर शिव बम २ भोला । ओढ़ै सिंहखाल गले रुण्डमाल लोचन

विशाल हैं लाल लाल माथे चन्द्रबाल सुन्दर बिराज। शंकर०॥ अरधङ्गरूप जैसे छांह धूप निरखत सरूप भये छकित भूप गति डिमिक डिमिक कर डमरू बाज। शंकर०॥ बकरा कुरङ्ग छवि अङ्ग अङ्ग लिये गौरि संग सोहैं सीस गङ्ग पिये भङ्ग रङ्ग सो करत काज। शंकर०॥ कहै दास निजामि कर जोर २ दीजे भक्ति दान राखो मान मोर अब चरन छोरि कहँा जाउँ आज। शंकर शिव०॥ ५८॥

आशा योगिया।

मो सम ना कोउ दूसर पापी। रामनाम शुभ मन्त्र छाड़ि कै करत पिशाची जापी॥ मारन मोहन बशीकरन कै साधन में मन थापी। भक्ति बिरागऽरु योग ज्ञान गति सुनत अन्तर काँपी॥ दान धर्म्म व्रत पूजा तीरथ कीन्हे नाहिं कदापी। खेलत जुआ फिरत निसिबासर चोरी नारि अलापी॥ पर उपकार करत तन काँपत छाड़त खास बिलापी। देखत सुनत कहत पर कीरति गलिगो गात सुरापी॥ गुरुनिन्दा पर-

यार रह्यो निसिबासर रिपु घेर्‌यो चहुं फेरो। मोह मान मद मारु प्रबल रिपु इन्ह संग फउज घनेरो॥ करत उजारि भवन सबही को भर न परो इन्ह केरो। सम दम जोग बिराग जतन बहु पहिरो कवच अछेरो॥ होय अभय मारो रिपु-दल को देवहु दुसह दरेरो। बिश्वरूप सुखसिन्धु मगन रहु दसौ दिसा जय तेरो॥ ६२॥

विहाग।

मन रे विषय कारन बहु नाचो। जो जगदीश ताहि बिसरायउ घर २ निसिदिन जाँचो॥ गुरुउपदेश नहीं ठहरत उर जैसे जल घट काँचो। बिषय-बयन सुनि तुरत ढरत सठ जिमि पावक घृत आँचो॥ अन्ध भये मणि नाम न देखत बरबस काँचुहि राँचो। बिरथा चलत कुमारग निसिदिन बेद पुराणहिँ बाँचो॥ झूठ पसार सार करि जानत गहत नै हरिपद साँचो। बिश्वरूप अवसर की चूकि यमगण देत तमाँचो॥ ६३॥

परज।

गहु मन अजहुं शरण रघुवर की। दीनबन्धु प्रभु जग हितकारक जीवन धन अति निसिदिन

हरि की ॥ ढार पाय जिमि नीर ढरतु है तैसे अन्तहु धन जन ढरकी। यह तन की कछु अवधि न देखत नदीकूल जिमि गति तरिवर की॥ दामिनि दमकि चमकि जिमि थिर नहिँ ऐसो धरणी भोग अमर की। ता महँ हेतु करत निसिबासर सुधि नहिं काल कराल कु-सर की ॥ साधन को अवसर भल पायो दुर्लभ साज लहेउ तन नर की। दीनबन्धु जगदीश हेतु करु छोड़ तुरित मन आस अपर की ॥ ६४ ॥

राग भैरव।

महावीर रनधीर शिरोमणि रामदूत गुरुखानी। जस प्रताप महिमा अतुलित बल कहि न सकत श्रुति बानी ॥ गोपद सम लाँघेउ सागर कहँ लगेउ न नेकु थकानी। कीन्ह परिच्छा देव बिबिध बिध लखि प्रभुता सुख मानी ॥ सीताशोकहरण करुणाकर बलसागर बरदानी। दनुज-दितिजकुल-अगम-गहन-बन दहन बिदित जग जानी ॥ जाणो लङ्क सङ्क नहिं मन महँ तोड्यो बाग बितानी। हाहाकार कियो सब पुरजन टेरत पानी पानी॥ मुनिजन सुखकारक

भयहारक द्रवी सुजन पहिचानी। बिश्वरूप प्रभु दया कीजिये हरिये मोह निसानी ॥ ६५ ॥

राग भैरव।

जय मारुतसुत जय हनुमान, दीनबन्धु प्रभु कृपानिधान। रामनाम रट रहत निरन्तर प्रेम सुधा नित करत हौ पान ॥ अंजनितनय तेज-बलसागर ज्ञानभवन सब गुनगनखान। कीन्हेउ भक्ति परम-सुखसागर निज बसि राखिउ राम-सुजान ॥ जाकि जस रघुबर निज मुख तें कपिदल महँ कियो बहुत बखान। छन महँ लाँघि पयोधि गयो है जासु प्रताप जगत प्रगटान॥ खलदल-तूल ताहि पावक सम बालापन मुख मेलेउ भान । बिश्वरूप प्रभु रामदूत बर देहु बेगि हरिपद निर्बान ॥ ६६ ॥

धनाश्री।

बालपन मातु पितु मोद कै प्रमोद झेले बालकन सङ्ग खेलि अति सुख पाइ कै। तरुन भयो तो तुङ्ग जोबन जलूस जागो तरुनिन सङ्ग लागी सुरति लगाइ कै ॥ कहै चिरजीवी अब बिरध भयो है तोहू घरही सम्हारै सारो औसर

नसाइ के। कुमति के बेरे क्यों न सोचत सबेरे मूढ़ येरे मन मेरे क्या कमायो इत आइ के॥

लावनी।

घर मिले उसे जो अपना घर खोवै है। जो घर रक्खै वह घर २ में रोवै है॥ जो राज तजै वह महा राज करता है। और जान तजै सो कभी नहीं मरता है॥ सुख त्यागै तो वह और का दुख हरता है। धन तजै तो फिर दौलत से घर भरता है॥ जो पलँग तजै वह फूलों पर सोवै है। जो घर रक्खै वह घर २ में रोवै है॥ १॥ जो पर दारा को तजै वह पावै रानी। औ करै झूठ को त्याग सिद्ध ह्वै बानी॥ जो दुर्बुद्धी को तजै वही हो ज्ञानी। मनसा त्यागै तो मिलै ऋद्धि मनमानी॥ जो सर्व तजै उसको सब कुछ होवै है। जो घर रक्खै वह घर २ में रोवै है॥ २॥ जो कुछ इच्छा नहिं करै वह इच्छा पावै। औ स्वाद तजै तो अमृत भोजन खावै॥ नहिं माँगै तो फल पावै जो मन भावै। है त्याग में तीनों लोक बेद यों गावै॥ जो मैला होके रहै वह

दिल धोवे है। जो घर रक्खे वह घर २ में रोवै है ॥३॥ जो पच्छवाद को तजे वह सबको जीते। यौ काम तजे तौ होय काम मन-चीते ॥ कहै देवीसिंह हरनाम जिन्होंने लीते। उनको गोबिन्द ने ब्रह्मलोकपद दीते ॥ अब बनारसी घर खोके ब्रह्म होवै है। जो घर रक्खे वह घर २ में रोवै है ॥ ४ ॥

कवित्त।

मानुष सरीर सतखण्ड अति जर्जर है ताह्व में पतन लखु ह्वैहै कोड़ काल में। मातु पिता बंधु आदि मीत सुत बित नारि कहो कौन तेरो जाते पर्यौ जगजाल में ॥ कहै भगवान नेकु मन में बिचारि देखो कोई ना सहाय जब परैगो बेहाल में। ताते धरु ध्यान गुण गान करु नाम जपु नातो दृढ़ राखो एक राधे नन्दलाल में ॥

घांटो।

धनि जगजननी भवानी हो रामा, अचल बरदानी ॥ जगमग २ जोति बिराजे तेज प्रताप निधानी ॥ महिमा अगम अपार बिंधिसरि सेस सुरेस न जानी ॥ दुखहरनी सुख सम्पति भरनी करनी लखन कल्यानी, हो रामा ॥ ७० ॥

होरी।

चेतुरे तैं महा मदमाती ॥ जब लगि मातु पिता घर प्यारी खेलि कूदि अठिलाती। गवने की चेत करी नहिं तनिको सुनतहि नाम पराती। मुखि कछु बोल न आती ॥ निज प्रीतम से प्रीति नहीं है औरन सङ्ग लुभाती। नाम अमी रस त्यागि दियो है बिषय हलाहल खाती। कभी न हिये पछताती ॥ खेलत रही सखिन के साथि आइ गई पिय पाती। देखत ताहि नयन भरि आयो बिहरि गई है छाती। कही कछु बात न जाती ॥ कहत सिरी पुर देखन धाये प्यारी गवने जाती। जो सखियाँ निज प्रीतम चीन्हत सोई सदा सुख पाती। हिये में पिया की समाती ॥ ७१ ॥

घांटो।

गुडुई खेलत सैयां मिललैं हो रामा, बाबुल की नगरिया ॥ छोड़ल चौर सेत रँग सारी पहिरल कुसुमी चुनरिया ॥ निर्गुन सेंदुर सर्गुन रँग इँगुरा सारल माँग मझरिया ॥ लखनदास नई नारि सुहागिनि हरि के चरन बलिहरिया ॥७२॥

कवित्त।

करत रहत धन्ध कछुक न जान्यो अन्ध आवत निकट दिन अगिलो झपाक है। जैसे बाज तीतर को दाबत अचानकही जैसे साँप मेडक को गसत गपाक है। जैसे मच्छिका को घात मकरी करत जात जैसे बक मीनन को लीलत लपाक है। सुन्दर कहत राम चेत रे अचेत नर ऐसे काल आय तोहि लै जैहै टपाक है॥ ७३॥

घांटो।

हम धन जावे गवनवाँ हो रामा, सैयां के भवनवां॥ ललित सेंदुर सिर कजर नयनवां, अम्बुज टोउ फल लै जोवनवाँ॥ झिनी २ सारी नई नविन गहनवाँ, हीरा मोती लागी दर दामनवाँ॥ ओढ़ि पहिरि धन ठाढ़ी अँगनवाँ, चलि भइँ सैयां के गोहनवाँ॥ बरनै लखन घाँटो पद निरगुनवां, अब नहिं होइहै मोर आवनवाँ॥७४॥

होरी।

चेतु रे तैं नया हलवाई॥ ज्ञान को चूल्हा सुमति से खोदो ध्यान कराहो चढ़ाई। दुविधा कुमति को ईंधन लाओ प्रेम अगिन धधकाई।

बैठु दृढ़ आसन लाई ॥ सुरति निरत कर घृतहि चढ़ाओ करछुल नेम बनाई। धरम बिबेक की मैदा मिसिरी रचहु समाधि लगाई। बनै तब नाम मिठाई ॥ साचे बाट सबन को तौलो गहकिन से मिलु धाई। कपट कपाट कबहुं जनि खोलहु बोलहु बचन सुहाई। लगै तब तेरी उपाई ॥ सुखमन बाट में हाट लगाओ जाहु सिरी न उँघाई। ठग चोरन से चौकस रहियो नाहीं तो मूल गँवाई। मरोगे सदा पछताई ॥ ७५ ॥

घांटो।

गुरु के बचन गठिअवतिउँ, रामा सुख पवतिउँ ॥ जौं जनतिउँ देखलि दुख लागी दूनौ नयना मुँदवतिउँ ॥ जौ जनतिउँ चाहै मोरि बैरिन तौ यहि खोदि बहवतिउँ ॥ जौ जनतिउँ संगै बड़ पापी तौ न मनहिं लपटवतिउँ ॥ आपन देव धरम जौं जनतिउँ बैठल हरिगुन गवतिउँ हो रामा, तौ सुख पवतिउँ ॥ ७६ ॥

लावनी।

भजन भाव कहु बनै कहाँ से मन माया के बीच फसा। तन काया में, ऐश करने को ये

दिल आन बसा ॥ खाने को इच्छा भोजन चढ़ने को असवारी चहिये । दिल लगने को, चमन की हवा व गुल क्यारी चहिये ॥ झूंठ होय या सच्च मगर करना बातें प्यारी चहिये । सारी रात भर, सनम के साथ मज़ेदारी चहिये ॥ रङ्ग महल के बीच चाहिये ज़र्दोज़ी का पलँग कसा । तन काया में, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ १ ॥ दिल में सोचता यही कि मुझ को दुनियां की दौलत चहिये । सिवा नीच के, नहीं अशराफ़ों की सुहबत चहिये ॥ हमदम से बस मज़ाख़ करना उलफ़त में आफ़त चहिये । जो कुछ होवे, बला से ऐयाशी अशरत चहिये ॥ इसको मारा उसको पीटा किसी का आकर माल फसा । तन काया मे, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ २ ॥ किसी का होता होय भला तो उसी जगह जाना चहिये । इधर उधर की, बात टो कहि बिगारि आना चहिये ॥ बात नहीं लग सके तो फिर झूठही क़सम खाना चहिये । किसी तरह से, ग़रीबों के तङ्ग

रुल्वाना चहिये ॥ सवाब कहां से होय पेट में उनके जाय अजाब धसा। तन काया में, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ ३ ॥ ऐसे बदबख़्तों की गति कहु क्योंकर के होनी चहिये। उन्हें पाप की, निशानी तन मन से धोनी चहिए। बल्लासिंह यों कहै पाप की क्यों गठरी ढोनी चहिए। उस मालिक के, रूबरू बात नहीं खोनी चहिए ॥ छैयासिंह की सुनि सुनि बातें कृष्ण सनम खिलखिला हँसा। तन काया में, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ ४ ॥ ७७ ॥

घांटो।

पिया बिनु निंदिया न आवै हो रामा कैसी करूँ मैं ॥ जगमग भवन भयानक लागै बिरह अगिन बरसावै ॥ सूनी सेज देखि होत दुख दूना विधि लिखि कवन मिटावै ॥ बरनै लखन पिया नाम अमियरस पिये अमरपुर पावै ॥ ७८ ॥

जंगला।

जँगले में हम डगर भुलानी री। कङ्कड़ कण्टक गहन अँधेरी हेरत पन्थ हिरानी री ॥ मारग सुगम मोहि नहिं सूझै बीहड़ लखि बिल-

खानी री। जित देखौं तित खोह नार नद तामें मैलो पानी री ॥ गरजत घोर भालु कपि केहरि सुनत घोष घबरानी री। हरिबिलास हरिनाम भानु बिनु भटकत बैस सिरानी री ॥ ७९ ॥

घनाच्चरी।

तजिकै अनेक तप तीरथ तपस्या तुंग ऐसे कलिकाल की जवाल में निबहु रे। बेद औ पुरान शास्त्र सम्मत बिचार उर लाखन तरंगैं त्यागि एकै राह रहु रे ॥ कहै चिरजीवी जो पै आपनो कुशल चाहै तौपै ये हमारी कही साची मान गहु रे। बैठत उठत जागे सोवत सु आठो जाम राधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण कहु रे ॥ ८० ॥

होरी।

पवनतनय आजु धूम मचाई ॥ टेक ॥ बारिध नांघि गये लङ्का महँ तरु पर जाइ छुपाई। व्याकुल देखि सिया को जबहीं मूँदरि दियो गिराई। सिया हिये हरषि उठाई ॥ १ ॥ मूंदरि देखि सिया अति भरमीं मन महँ तरक बढ़ाई। सुमिरन कीन्ह प्रगट तब भयऊ सिया मन आसिख पाई। धस्यो तब उपबन जाई ॥ २ ॥ उप-

बन जाइ कै पेड़ उपाख्यो रावन पकरि मँगाई । पूँछ बाँधि पट तेल चुभायो पावक दियो लगाई। चल्यौ कपि गढ़ पर धाई ॥ ३ ॥ कूदि फाँदि कै पुर सब जारत दसमुख हिये अकुलाई । लागी आग जरत पुर सगरो बिलपत लोग लुगाई । सिरी हिये दृढ़ समाई ॥ ४ ॥ ८१ ॥

लावनी ।

कहै मदोदरि सुनो पिया तुम्हें यही काम करना चहिये । रामचन्द्र को, जानकी देके चरन पड़ना चहिये । हैंगे पूरन ब्रह्म रामजी दीन दुखी के हितकारी । नर तन धरि के, जगत में लीला प्रभु ने बिसतारी । बड़े बड़े निस्चर को मारिके कीन्हीं मख की रखवारी । गौंतमनारी, शिला थी प्रभू ने उस को निस्तारी । कोमल जिनके चरन कमल उन चरनन की है बलिहारी । सुन दसकंधर, जगत में जिन्की महिमा है भारी ॥

दोहा ।

अतिही दीनदयाल हैं सीतापति भगवान ।
जोगि जती सुरसिद्धमुनि निसिदिन धरते ध्यान ॥

ऐसे राम का ध्यान तुम्हें दिल के अन्दर धरना

चहिये। रामचन्द्र को जानकी दैके चरन पड़ना चहिये ॥ १ ॥

देस २ के भूपति आये जनकसभा में सुनो पिया। नहीं किसी से, टरा धनु गया सभों का हारि हिया। कौतुक में श्रीरामचन्द्र ने तीन खण्ड धनु तोरि दिया। धनुष तोरि के राम ने तहाँ जानकी व्याहि लिया ॥ लिया जानकी व्याह राम ने तब क्यों नहिं संग्राम किया। हठ को छोड़ो, दसानन मिलो राम से दैके सिया ॥

दोहा।

कीन्ह सिपुनखहि नाकबिन खरदूषन को नास।
एक बान में बालि को निकरि गई तन साँस॥

ऐसे बल के धाम राम उनसे तुमको डरना चहिये। रामचन्द्र को, जानकी दैके चरन पड़ना चहिये ॥ २ ॥

फिरैं सिंह की तरह संग में लछिमन जिनके हैं प्यारे। बीर धुरन्धर, बड़े हैं तीर धनुष कर में धारे। हनूमान सों पायक जिनके नघि आये सागर पारे। मधुबन भीतर, जाय फल खाय बिटप सब उख्भारे। एक मुष्ट में हत्यो अछय

की गई मर्द निश्चर डारे। तुम्हरे देखत दसानन इक चण में लङ्का जारे ॥

दोहा।

करौं बिनय कर जोरि कै, मानहु मेरी बात।
तजो बैर रघुनाथ से, बनो रहै अहिवात ॥

यही उचित है पिया तुम्हें रघुबर सों नहिं लड़ना चहिये। रामचन्द्र को, जानकी दैके चरन पड़ना चहिये ॥ ३ ॥

नर मत जानो रामचन्द्र को सब घट व्यापित हैं भगवान। ममता माया, छोड़ि के रामचन्द्र का धर तू ध्यान। मद्दोदरि का बचन लगा रावन के मन में तीर समान। होत प्रातही, जाइ उठि सभा बीच बैठा अज्ञान। महा मूढ़ मूरख अभिमानी राम विमुख चाहै कल्यान। ख्याल मदारी, राम का ध्यान धरें दिल के दरम्यान।

दोहा।

रम्प्रसाद के ख्याल हैं, मुल्कों में सरनाम।
लालू सेठ उस्ताद का, कासी में है धाम ॥

कथ के नरायन कहै हमें तो रामचरित बरबस चहिये। रामचन्द्र को, जानकी दैके चरन० ॥४॥

गज़ल ।

रावन से कहती है मंदोदर ऐ मेरे मूनिस जिगर । मान ले कहना मेरा मत राम से तू रार कर ॥ होगा आजिज़ तू बहुत हाथों से लछिमन राम के । गर न मानो बात मेरी छोड़ कर अपना फ़ख़र ॥ मुन्सफ़ी की है जगह इस वक्त तुझको पुर्ज़रूर । है सरासर तूही मुल्ज़िम लाया सीताजी को हर ॥ राम लछमन क़त्ल में मशग़ूल थे जब मिर्ग के । जो बना इर्शाद से तेरे था मारिच नीशचर ॥ देख तनहा जानकी को बेकुमुक औ लामकाँ । ले उड़ा धोखे से उन्को करके कैसा मक्रो फ़र ॥ क्या यही दस्तूर शाहों में भुरोव्विज है तमाम । नीतिशाही तर्क कर दुज़्दी प बाँधे खुद कमर ॥ था नहीं लाज़िम तुझे खुफ़िय: में हरना सीय का । है नहीं वह मर्द हर्गिज़ छिपं के मारै जो तबर ॥ थी बुज़र्गी आप की गर मूबमू लछिमन के हो । कूवते बाज़ू से अपने लड़ के लाते उन्को घर ॥ फ़िल्हक़ीक़त काम तूने है बहुत बेजा किया । कुछ तवक़्क़: जिसे अपने जाँ रिहाई की न कर ॥

जा पकड़ क़दमे-मुबारक देके सिय रघुनाथ को। बख़्शेंगे तेरी सब ख़ता तूने जो की है बेख़तर॥ कैसी कैसी पतित तारे आये उन्की जो सरन। देती हूं सल्लाह तुझ को मैं इसी उम्मेद पर॥ मासिवा तद्बीर दीगर जाँ खिलासी की न जान। कोई दम में ज़ीस्त-प्याला अब तेरा जाता है भर॥ यह नहीं मुम्किन् कि युरिश राम को तू दे शिकस्त। जिस जगह मौजूद लाखों पह-लवाँ हैं नामवर॥ एक की देखी है कुदरत आप ने तो चश्म से। कोई हम्सानी न उस्का एक भी निकला इधर॥ क्या किया बीरों की हालत लङ्क कैसी ख़ाक की। कुछ नहीं बन आई तुमसे चल दिया सिंध नाघ कर॥ जिस्के तनहा दूतने कैसा किया सब को ज़लील। फिर यह कब अग़लब है मालिक से तुझे पाना ज़फ़र॥ पस अब अ-पनी छोड़ दे तू ज़िद्द ऐ मग़रूरसीद। क्यों अबस करता है मुल्के जाविदानी को सफ़र॥ आके तुम भी कुछ इसे समझा दो भोलेनाथजी। पस्तु शायद आप की कर जावे इस्को कुछ असर॥

मलार।

सकल जग मङ्गल जोग परे, प्रभु चाहत अ-वतरन ॥ उच्च चन्द्र शनि सहित लग्न में छठयें राहु अरे। उच्चहि के गुरु मङ्गल दोऊ चउथे अ-वर ढरे ॥ बुध अष्टमि रोहिनि तीनिउँ में ती-निउँ देव ढरे। हर्ष जोग इन साधनहू ते हरि सरूप उघरे ॥ भादों मास भद्रपद जामें अग जग जीव हरे। बड़ो रहस्य केतु में झलकत बरहें भवन चरे ॥ कंस बिधंस करत ग्रीषम सों भये घनश्याम खरे । देखत छवि बसुदेव मोर सों नाचि वठा सँकरे ॥ ८४ ॥

भैरव।

प्रात होत जागे नँदनन्दन खेलन बालक आये ॥ केस सँवारि मातु जसुमति ने मुख म-ञ्जन करिवाये। पीत झँगुलिया गल वैजन्ती भू-षन अङ्ग सुहाये ॥ सीस चौतनी कानन कुण्डल दृग अञ्जन लगवाये। नाक नथुनियाँ कटि क-रधनियाँ पैजनियाँ पग भाये ॥ छन नाचत छन सैन बतावत बोलत मुख तुतराये। रोदन क-रत हँसत छन किलकत जननी कण्ठ लगाये ॥

दधि ओदन लै खात सखन सँग आँगन केलि मचाये। हरिबिलास मनहरन श्यामघन नँद घर आनँद छाये॥ ८५॥

भैरवो।

योगिया भोर भये ब्रज आवै। लीन्हे बैल गैल में डोलै शैल निवास बतावै॥ जटिलो गङ्ग भुजङ्ग लपटि सिर बालक बृन्द डरावै। केहरि छाल माल मुण्डनि उर भाल मयङ्क सुहावै॥ नयन तीन तनु भस्म लगाये नीलकण्ठ छवि पावै। कर डमरू तिरसूल बिराजै सृङ्गीनाद बजावै॥ पूछत फिरत नन्द को मन्दिर मोहनगुण-गन गावै। हरिबिलास हर हरि दर्शन हित अपनो नाम छिपावै॥ ८६॥

ठुमरी।

देखो सखी छबि नागर नट की। अति सोहत सिर मेरो मन मोहत, झाँकी बाँकी मोर मुकुट की॥ केसर भाल तिलक सुखमा कै नाक बुलाक हलन हिय खटकी। खञ्जन नैन मधुर मद गञ्जन, लज्जित ह्वै मृग बनबन भटकी। लुटकत अलक कपोलन ऊपर घुंघुंरारी कारी लट

लटकी। उर बनमाल सोहै कर कङ्गन सिल्हा श्याम सुरँग रँग चटकी॥ श्याम सुरत पै अति छवि छाजै काछनि कटि पीताम्बर पट की। हरिजन सरन निरखि छवि हरि की हिय ते खोल किवाड़ कपट की॥ ८७॥

लावनी।

श्यामसुँदर अलबेली मूरत सूरत पै वारों तन मन। कभी न बिसरे, हृदय से प्रेम प्रीत की लगी लगन॥ मोर मुकुट सिर सजे जड़ाऊ कानन में कुण्डल सोहै। तिलक भाल पर, करे जगमग जगमग जग को मोहै॥ अलि अवली सी सजे वङ्क भौं लोचन की शोभा वो है। अपने मुख से, बड़ाई करे कहो ऐसा को है॥ गङ्गा जमुना सरस्वती तिरबेनी की पैनी चितवन। कभी न बिसरे, हृदय से प्रेम प्रीत की लगी लगन॥१॥ गोल कपोल अमोल रसीले तिन पर ससि की उँजियारी। लट लटके से, लटक के नागिन सी लहरें न्यारी॥ लख नासा को अधीर होके कीर पीर पावे भारी। अधर मधुर पर, सुघर वन्सी की धुनि लगती प्यारी॥ ज्यों

मोती की लड़ी जड़ी दाँतों की सजावट लगी सजन। कभी न बिसरे, हृदय से प्रेम प्रीत की लगी लगन ॥२॥ ग्रीव कम्बु कमनीय सुहाती जिसमें मणि बैजन्ती माल। नाथ तुम्हारे, रूप की अनूप छवि औ भुजा विशाल ॥ कटि पीताम्बर कसे किङ्किणी लसे मुदित मन दीनदयाल। चरण कमल को, देखके भूले अपनी चाल मराल॥ जलज नील तनु बरन निहारें करें भक्तजन तेरा भजन। कभी न बिसरे, हृदय से प्रेम प्रीत की लगी लगन ॥३॥ लकुट हाथ के बीच सजीली पीताम्बर से फेंट कसी। ललित त्रिभंगी, सोहनी छवि आखों में रहे बसी ॥ त्रिभुवन की सुखमा के आकार जोति भास्कर और ससी। रामप्रताप की, दरस करने से भवबाधा जु नसी॥ जनहित कारन चरित किये औतार लिये तुम को धन धन। कभी न बिसरे, हृदय से प्रेम प्रीत की लगी लगन ॥ ४ ॥

ठुमरी।

इक दिन बंसी श्याम बजाई ॥ जैसे बिहंगम बैठि डार पर मुख दे फल नहिँ खाई। गौवन अन धन चरन छाड़ दियो बाछा पियत न गाई ॥

मोहीं नारि असुर मुनि मोहैं गगन बदरिया छाई। जमुनानीर थीर ह्वै बैठे कुञ्ज रहे कुम्हिलाई॥ मोही है वृषभानलाड़िली पाँव पिआदे धाई। चलत न रविरथ हँसन बिलोकित शङ्कर ध्यान छोड़ाई॥ उलटि पषान पखो है महितल रिपुदल धरि सितलाई। सूरश्याम सों यों जा कहिये सुधि हमरी बिसराई॥ ८९॥

राग मल्हार।

बंसी श्रवन सुनि गोपकुमारी॥ अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै तन मन की सब सुरति बिसारी॥ गल की हार पहिरि निज कटि में कटि की किङ्किनि गल में डारी। पग पायल लै धारत कर में कर की पहुंचियाँ पगन मझारी॥ कान बुलाक कपोलन बेंदी नाक में पहिरी कान की बारी। एक नयन अंजन बिन सोहै एक नयन में काजर धारी॥ कोउ भोजन प्रति परसत दौरी कोउ जेंवत कर ग्रास सिधारी। नारायण जो जैसे हुती घर तैसेही उठि बिपिन पधारी॥

झंझौटी का ज़िला।

सखी तुम नेक तौ रूप देखावौ। घूंघटपट

मुख ओट करो क्यों याहि तनक सरकावौ ॥ ब्रज में लाज करै सो बौरी हँसि २ कै बतरावौ। नारायण हम दोऊ बराबर क्यों इतनी सकुचावौ॥

राग पुर्वी।

ऐसे जिनि बोलौ नन्द के लाला । छाड़ि देहु अँचरा मेरो मोकों जानत औरसि वाला ॥ बार २ मैं तुमहिं कहति हौं परिहौ बहुरि जंजाला। जोबन रूप देखि ललचाने अबहीं ते ये ख्याला ॥ तरुणाई तन आवन दीजै कत जिय होत बिहाला। सूरश्याम उर तें कर टारहु टूटैगो मोतिन को माला ॥ ८२ ॥

लावनी।

गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती। सब कीन्हे तन सिंगार-मदन मदमाती ॥ मग ठाढ़े नन्दकिशोर लकुटि कर धारे। वन डोलत लीन्हे धेनु चरावनहारे ॥ सँग सखा लिये दस बीस गोप के बारे। सब घेर लई ब्रजबाल श्यामघन कारे ॥ लैहौं मैं आज जगात जहाँ तुम जाती। गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती॥१॥ बोली इक बिहँसि रिसाय सुनौ गिरधारी। महि कंस

राय को कठिन राज है भारी॥ सब जानि परै ठकुराइ श्याम बनवारी। मोहन तुम कब ते भये दान अधिकारी॥ व्रजराज जसोदा सरल पूत उतपाती। गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती॥ २॥ जानै नहिं पैहौ करौ कोटि चतुराई। नृप बोलि पठावहु तुमहिं लेइ छोड़वाई॥ नित बेचत गोरस भोर होत उठि धाई। मोहि पकरि मिली हौ आज नवल तरुनाई॥ दीजो दिन दिन को दान कहा अठिलाती। गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती॥३॥ करि घूंघटपट की ओट चोट करि गोरी। लीजै हरि दधि को दान गयल तजु मोरी॥ लीन्हे हरि कण्ठ लगाय मैन रँग बोरी। तब गये धाम घनश्याम प्रीति अति जोरी॥ पिक हरिविलास बर चहत भक्ति रस स्वाती। गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती॥ ४॥ ६३॥

राग काफ़ी।

मेरि बरजोरी अबीर लगायो लँगर ब्रजराज दुलारो॥ हम सब जात रहीं जल भरिबे खैंची चीर हमारो। गागरि छीन महीतल पटकी औ

कंचुकि पट फारो । बहुरि तकि काँकर मारो॥ गारी देत हरि लाज न आवै कारे मन तनु कारो। खोलि २ घूँघट मारग में सबको बदन निहारो । कोऊ नहिं बरजनहारो ॥ अब कैसे लाज रहै मम सजनी मोहन बैर सचारो । हरिविलास नित सङ्ग सखा लै छेकत यमुनकिनारो । चलौ नृप कन्स पुकारो ॥

कान्हरा ।

अतिही करत तुम कान्ह अचगरी। काहू की छीनत हौ गेंडुरी काहू की फोरत हौ गगरी॥ भरन देहु यमुनाजल हमकों दूरि करो बातें ये लँगरी। पैंड़े चलन न पावत कोऊ रोकि रहत लरिकन लै डगरी॥ बाट बाट सब देखत आवत युवती डरनि मरत हैं सगरी। सूर-श्याम तेहि गारी दीजै जो कोउ आवै तुम्हरी बगरी ॥ ९५ ॥

राग भैरवी ।

मोरी डगरिया छाड़ो मोहन जाना हमको दूर रे। झकझोरत कंचुकि तुम फारी गागरि कीन्ही चूर रे ॥ नन्द यशोमति सरल शीलता छाय रही व्रज पूर रे। ताकी सुनु नारि मग छेकत निडर कुटिल मन कूर रे॥ चटकीली चू

नरि हम धारे तापर डारत धूर रे। हरिबिलास हरि जानि परी अब भे अबलन पर शूर रे ॥६६॥

राग कलंगड़ा।

सुनौ यशोमति सिर पर गगरी । हम यमुनाजल भरन जात ही बीच मिल्यो सुत तेरो रगरी ॥ बहियाँ मोरि पकरि झकझोरी, कारनफूल मोतिन लर तोरी, फिरि कपोल पर हाथ चलायो यह गति आज भई ब्रज डगरी ॥ चौर नवीन सकल उन फारे, लकुटि हाथ ले मग में ठाढ़े, दशा हमारि देखि ब्रजबनिता भाजि गईं निज २ गृह सगरी ॥ गागरि छीनि महीतल पटकी, सुनौ कथा निजनागरनट की, एक जतन हम सबनिं बिचारी जो तुम कहौ तजैं या नगरी ॥ बसौ सदा ब्रज तुम नँदरानी, छाड़ो हम यमुना को पानी, हरिबिलास चिरजीवहि साँवरो जा कारन तुम तें हम झगरी ॥ ६७ ॥

धनाश्री।

भाजि गयो मेरो भाजन फोरि । लरिका सहस एक सँग लीन्हे नाचत फिरत साँकरी खोरि॥ मारग तौ कछु चलन न पावै धावत गोरस लेत

अजोरि। सकुच न करत फागु सी खेलत तारी देत हँसत मुख मोरि ॥ बात कहौं तेरे ढोटा की सब व्रज बाँध्यौ प्रेम की डोरि। टोना सो पढ़ि नावत सिर पर जो भावै सो लेत है कोरि॥ आप खाय सो सब हम मानो औरनि देत सिकहरे टोरि। सूर सुतहिं बरजो नँदरानी अब तोरत चोलीबँद डोरि॥ ६८॥

सोरठ।

तिहारो यह दिन दिन बिगरो जाय, श्रीनँदरानी माय॥ काँकर राख काँट झोरिन भरि संग छिकोर लवाय। भीति डाँकि निसि मे घर पैठत ढाँटेहु नाहिं डेराय॥ काँकर डारि लखे भाँड़न को आवत दाँव बचाय। राख डारि जल थारि सुखावै माखन लेत चोराय॥ आप खात कछु सखन खवावत बहुत देत ढरकाय। हम दौरत काँटे छितरावे छन में जात पराय॥ श्रुतिहुँ चोरायो सार भाग को छांछन जग भरमाय। देव चरित का जानैं गोपी जसुदा रही मुसुकाय॥

भैरवी।

मोहन मोरी मटुकी फोरी सुनो जसोमति

माई री ॥ ऐसो लड़का भयो जगत में मांगत दूध मलाई री। मटुकी झटक पटक कै सटकी अब नहिं देत दिखाई री ॥ ले छड़िया निकरीं यशुमतिजी का तुम धूम मचाई री। भोरे २ कीन्ह उरहनो ऐसो ढीठ कन्हाई री ॥ एरी माई नन्द दोहाई याको दधि नहिं खाई री। धेनु चरावत बीन बजावत आपुहि लेत बुलाई री ॥ तनक मुरलिया टेर दई है सबकी मति बौराई री। ज्ञानदास उठि भोर जगावैं मोहन की चतुराई री ॥

राग काफरा।

करत कान्ह ब्रज घरनि अचगरी। खीजत महरि कान्ह सों फिरि २ उरहन ले आवति हैं सगरी ॥ बड़े बाप को पूत कहावत हम वै बास बसत इक नगरी। नन्दहु ते ये बड़े कहे हैं फेरि बसैहैं यह ब्रज डगरी। जननी कै खीजत हरि रोये झूँठहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याम मुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी॥

राग खम्माच।

मोहन तू इतनी कही मान। बाहर मति उरझै काहू सों मेरे जीवन प्रान ॥ ब्रजबनिता

तेरे गुन मोसों नित प्रति करत बखान। मेरी काह्यौ तु साँच न माने सुनि लै अपने कान॥ इन बातन सों निन्दा उपजै ठकुरायत में हान। नारायण सुत बड़े बाप को तजिदे ऐसी बान॥

भैरवी।

अब जनि जाहु कहूं तुम लालना। गर्गगिरा मन समुझि लगत भै तासों भवन भूलिये पालना॥ दधि माखन बिधि दियौ घनेरो तोसों अधिक और को मेरो, काहे जात तात काहू घर निति उठि देत उरहनो ग्वालिना॥ नारायण अनुकूल हमारो तिसरे पन दीनो इक बारो तासों स्याम धाम निज खेलौ हलधर सहित गोपिका बालना॥ अटारूढ़ देखौ बन शोभा तरु प्रसून अलिगन मन लोभा, हरिबिलास सुखराशि धरणि व्रज बोलत मोर बिटप की डालना॥

राग झंझौटी।

मैया यह झूँठहि दोष लगावै। बूझ ले मेरे सखा सङ्ग से जो तोहि साँच न आवै॥ भवन रहूँ तौ तुही कहैगी गोचारन नहिं जावै। औ जाऊँ तौ यह मग छिड़ैं फेर उरहनो लावै॥ त्रिया

चरित्र रचैं ढिग तेरे तोरि कै हार दिखावै।
तू जननी मेरी अति भोरी याकी कहे पतिआवै॥
कित गजराज कहां मृगछौना अनघड़ मेल मि-
लावै। नारायण मोहन मुख बातैं सुनि जसुमति
मुसक्यावै॥ रेख़ता।

सखी सुन प्यारी रूठी है मना दोगी तो क्या
होगा। जहां में ख़ैर का डङ्का बजा दोगी तो क्या
होगा॥ न खाना मुझको भाता है नहीं निस
नींद आती है। प्रिया के पास गर जाकर मिला
दोगी तो क्या होगा॥ १०५॥

दोहा।

प्यारी रूठी ऐ सखी, कहा कीजिये हाय।
बनत न और उपाय कोउ मरूँ आज बिष खाय॥
दिवस चिन्ता में जाता निस तरैयां गिन गँवा-
ता हूं। करूं कर जोरकर मिन्ती बुला दोगी तो
क्या होगा॥ कभी सीना धड़कता है प्रिया जब याद
आती है। सखी इस हौल का शर्बत पिला दोगी
तो क्या होगा॥ दोहा।

चिन्ता में दिन जात उर, धड़कत सारी रात।
खांन पान की सुधि नही, बैठे रयन बिहात॥

जिगर सीना दिलोदीदा बिरह में फट गये रोरो। लगाकर वस्ल का मर्हम बचादोगी तो क्या होगा॥ चलो हरिजन हमीं चलकर प्रिया से कह सुना देवैं। अजी इस् नीमजाँ को गर जिला दोगी तो क्या होगा॥ रेखता।

इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी। तेरे मनाइवे में मोहि श्रम भयो है भारी॥ प्रीतम को आज तो बिन पल छिन न चैन आवै। नहिं जी लगत भवन में नहिं बन की छबि सुहावै॥ हँस बोलिबो कहां को नहिं खान पान भावै। हाथन में चित्त तेरो पुनि २ हिये लगावै॥ अति बिकल ह्वै रह्यौ है वह साँवरो बिहारी। इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी॥ १॥ प्यारे के आगे अपने गुण को मैं कर बड़ाई। तेरे मनाइवे कूँ बीरा उठा कै आई॥ बल बुद्धि मोमे जितनी तितनी मैं सब लगाई। पै नैकहूं न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधि सों राजनीति मैं कहि २ कै तोसों हारी। इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी॥ २॥ तेरी जो नित बड़ाई सखियां सभी बखाने। प्यारो हिये

की कोमल सपनेहूँ रिस न जाने ॥ यह आज काहा भयो है बैठी हो भृगुटी ताने । उन सखिजनन की कहिबौ अब कौन सांच माने ॥ सब झूँठही बड़ाई भामिन करें तिहारी । इतनों न मान कीजे वृषभान की दुलारी ॥ ३ ॥ लालन के साथ मिल के बनशोभा निरखौ प्यारी । कहुँ सघन ललित छाया कहुं फूली फुलवारी ॥ जल सों भरे सरोवर रहिं झुकि द्रुमन की डारी । बोलत अनेक पच्छी बरनत हैं छवि तिहारी ॥ चल बेगही पधारो यह लालसा हमारी । इतनों न मान कीजे वृषभान की दुलारी ॥ ४ ॥ एरी सुघर सयानी मो बिन्ती मान लीजे । तजि कै यह मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजे ॥ नितही अधर सुधारस हँसि २ कै दोऊ पीजे । फिर कर न उनसे रूठो बरदान येही दीजे ॥ नारायण याही कारण निज गोद मै पसारी । इतनों न मान कीजे वृषभान की दुलारी ॥ १०७ ॥

कान्हरा ।

ऐसो मान न कीजै बारबार ॥ एरी सुहगिनि भामिनि तोपै हौं पीवौं जल बारबार ॥ उत सों

लाल पठावत तों ढिग तू द्वत सों दे टारटार। मैं चौगान की गेंद भई री मेरे नहीं पग चार-चार॥ तेरो मान अपमान है मेरो समझावत गई हारहार। नारायण विधि कैसे लगी तू पात पात मैं डारडार॥ १०८॥

झझौटी।

मोहि मति रोकै री तू एरी व्रजनागरी। रूप को निधान है तू गुनन को खान है तू तोहि सम कौन आज तेरो बड़ो भाग री॥ कहै तौ मैं नृत्य करूँ बाँसुरी में राग भरूँ कान्हरो किदारो भैरो सोरठ बिहाग री। तू तौ सदा उपकारी हितहू की करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखै लाग री॥ १०९॥

बसन्त।

व्रजराज आज खेलत बसन्त, जेहि अगम निगम गावैं अनन्त॥ सब गोरस मटुकी सीस धारि, बनि आईं बन करिबे विहार। लै संग सखा व्रजपतिकुमार, सब घेरि लईं बन गोप नारि॥१॥ कोई मीजे मुख लै लै गुलाल, कोई मटुकी लई कोई कण्ठमाल। कोई केसर लेपन

करत भाल, लखि हँसत परस्पर नन्द लाल ॥२॥ कोइ तारी देत गारी सुनाय, कोइ तनदुकूल लीन्हों चुराय। कोइ सैन देत कर डफ बजाय। कोई बिनति करत सिर नाय नाय ॥ ३ ॥ ब्रज गोपवधुन संग करि प्रहास, सब मुदित गये निज २ अवास। नित कानन यहि विधि अति हुलास, गावत बसन्त सुख हरिबिलास ॥ ४ ॥

होरी।

बिनय करौं कर जोरि सुनों प्यारी बिनती मोरी ॥ बीते काल जाम निसि प्यारी आवतहीं तेरी पौरी। ललिता आय धाय मुहि मग ते गई लवाय बरजोरी। मेरो कछु बस न चलोरी ॥१॥ बहुत कह्यो समुझाय बिनय करि दैदै सौंह करोरी। सुनी न कछु बिनती मेरी मैं परबस जाय फँसोरी। हृदय पछताय रह्योरी ॥२॥ होरी को दिन आज सखीरी ब्रज की खोरी खोरी। मारत रङ्ग कुमकुमा केसर अबिर उड़त झोरी झोरी। सकल ब्रज फाग मचोरी ॥ ३ ॥ जो कछु चूक भई हो मोसों करो अब माफ किसोरी। मान त्यागि मिलु बेगि हरषि हिय मैं चेरो तेरो

री। तेरे पग सीस धरोरी ॥ ४ ॥ गहि कर चि-
बुक प्रिया को मोहन कहत निहार निहारी।
गावैं ग्वाल गुलाल उड़ावैं नाचैं सखी सब तोरी।
चलो मिलि खेलैं होरी ॥ ५ ॥ उर उमग्यो आ-
नन्द प्रिया के सुनत बचन हरि को री। बिहँसि
उठी कर राखि श्याम गल मिलि गई सुन्दर
जोरी। सखी निरखैं तृण तोरी ॥ ६ ॥ हरिजन
लखि बिहार श्रीहरि को भई विवुध मति भोरी।
कहि जै जैति किशोर साँवरो जै वृषभानकि-
शोरी। सुमन नभ तें बरसो री ॥ १११ ॥

होरी।

लाल लली दोउ चातुर होरी खेलि रहे स-
यनन में। सकत न खेलि उजागर पापिनि लाज
बसी नयनन में ॥ बाम अङ्ग यह परसत अपनो
वह दाहिन चयनन में। एकै गाल गुलाल लगा-
वहिं भींजि रहे मयनन में ॥ दोउन की दोउ
सुन्दर मूरति देखि रहे अयनन में। दोउ अङ्कन
में मुख धरि सोवत ज्यों पंछी डयनन में ॥ कोउ
पैन भरि भेद न पावत द्वन्द सूनी रयनन में।
दुर्गम देव रहस्य न कैसेउ आइ सकै बयनन में ॥

होरी।

होरी खेलत विपिन बिहारी, लिये रँग की पिचुकारी ॥ ग्वाल बाल लीन्हे रँग भीने बेणु बजावत प्यारी। आनक ताल बीन डफ बाजत नाचत दैदै तारी। मुदित मन गिरिवरधारी ॥ करि सिंगार सकल बनि आईं घरघर तें ब्रजनारी। सैन दई घनश्याम सखन को पकरी गोप-कुमारी। बात नहिं जात हमारी ॥ रङ्ग गुलाल ग्वाल ले धाये सब बनिता रँगिडारी। झपटि २ पट पकरि सखा सब देत फाग की गारी। निरखि बिहँसत बनवारी ॥ कोउ कहै मो हरवा टूटो कोउ कहै मो चूनरि फारी। हरिविलास हरि फाग अनोखो हरि लई लाज हमारी। सदन सब चलो पियारी ॥ ११३ ॥

होरी।

श्यामा ब्रज खेलत होरी ॥ करि सिँगार नख शिखतें बनिता सकल भईं इकठौरी। वृन्दाबन में फागु मचाये रूप सिंधु तनु गोरी। बयस में सब हैं थोरी ॥ नन्द सूनु तेहि औसर आयो ले गुलाल भरि झोरी। घेरिलयो ब्रज गोपकुमारिन

वेणु लई कर छोरी। लेपि हरि आनन रोरी॥ मिलि २ यूथ नचाइ श्याम को कर पकरो बरजोरी। बदन चूमि पुनि कण्ठ लगायो औ बनमाला तोरी। पाग केसर रँग बोरी॥ कोउ गहि पाणि कहत मोहन तें बहुत करी दधि चोरी। हरिबिलास कोउ नारि सुनैनी गारि देत मुख मोरी। हँसत वृषभानकिशोरी॥ ११४॥

होरी काफी।

श्यामसुंदर व्रजराज सखिन सँग खेलत होरी॥ नन्दनँदन के संग सखा हैं राधे के सँग गोरी। अबिर गुलाल उड़त दोउ दिसि होरी होरी होरी। आज व्रज धूम मच्योरी॥ केसर कुसुम कुमकुमा रोरी ग्वाल खड़े भर झोरी। तिनके मध्य मुदित जदुनन्दन निरखत नवलकिसोरी। मदन मन देखि छक्योरी॥ राधे कहत सुनो मनमोहन सारी रँग में बोरी। इतनी बात हमारी मानो अब न करो बरजोरी। श्याम तुम बहियाँ मरोरी॥ रामप्रताप आस चरनन की चिरंजीव यह जोरी। भक्ति दान प्रभु हम कौं दीजे इतनी अरज है मोरी। कहत दोउ कर जोरी॥ ११५॥

राग ललित।

राधे छिरकति छैलछबीली। कुचकुमकुम कंचुकि बँदटूटे लटकि रहीं लट गीली॥ बन्दन शिर ताटंक गण्ड पर रतन जड़ित मणिनीली। गति गयन्द मृगराज सुकटि पर शोभित किंङ्किनि ढीली॥ सचैव खिल जमुनाजल अन्तर प्रेम मुदित रस भीली। नन्दसुवन भुज ग्रीव बिराजत भाग सोहाग भरीली॥ वर्षत सुमन देवगण हरषित दुन्दुभि सरस बजीली। सूरस्याम स्यामा रस क्रीड़ित जमुना तरँग थकीली॥ ११६॥

खेमटा।

आली सियावर कैसा सलोना। कोटि मदन मूरति नेउछावर देदे सखी चलीं भाल दिठोना॥ मोर डरत जिय डगर बगर में कोऊ सखी करि देइ न टोना। हौं तो जाइ ललकि उर लगिहौं रेहौं न देइ जो मोहि भर सोना॥ कहर पर्यो यह जनक सहर महँ छूट्यो खान पान निसि सोना॥ श्रीरघुराज मौरवारेपर अब तौ मोहि फकीरिन होना॥ खेमटा।

पिया तेरी सुरत पर मैं वारी॥ तुव सुख की

मुसुकान माधुरी बार २ पिया बलिहारी॥ जुलुफ अजब तेरी गजब गुजारै कतल करै जैसे तरवारी। श्रीरघुराज जुलुम तेरी आँखैं दिल को दिवाना करि डारी॥ ११८॥

खेमटा।

गगरी लिये अँठिलात गुजरिया। गोरबदन मदमस्त नागरी राह चलत बल खात कमरिया। पार करत मेरो अल्हर करेजा भौंहैं कुटिल तेरी बाँकी नजरिया। जोहत राह तेरी हम ठाढ़े कस ना आवत मोरी नगरिया। हरिजन सरन चैन ना तुम बिन क्यों तरसावै वृषभानदुलरिया॥

खेमटा।

मोरी नई रे अँगिया मसकाय गेले रे। हठ करि करि कान्हा कर पकरतु है सिर को गगर ढरकाय गेले रे। मैं तो गई जमुनाजल भरिबे कठिन सनेहिया लगाय गेले रे। अबतो हमैं कैला ब्रज तजि गैले डारि बिरह कलपाय गेले रे॥

खेमटा।

चलु परे हट मति रोकु डगरिया। ऐसो लँगर मेरो डगर न छाड़त भारी लिये सिर जल की

गगरिया॥ बेर भई जल भरन आइ हूँ ननद कुटिल मोरी सासु झगरिया। तोहि निलज कछु लाज न आवत सारी हँसत यह ब्रज की नगरिया॥ हार गई तुमसों मैं नटखट रिसि उपजत मुख आवत गरिया। हरिजन सरन बिरिज ना बसिबे कौन करै तोसों निति की रगरिया॥

हारी खम्माच ताल जत।

मोपै अबहीं ललन पिचुकारी न डार, मोकों घरवाँ करत सब मार मार॥ भयुं बयस पर अबहीं कुआरी, जियरा फिरत मेरो डार डार॥ कहै मारकंडे मन मान ले मोहन, बिनती करत तोसों बार बार॥ १२२॥

होरी काफी।

मति मारो पिचुकारी स्याम अब देउँगी मैं गारी॥ भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदरि बिगरैगी न्यारी। देखैगी सासु रिसायगी मोपै संग की ऐसी हैं दारी। हँसैंगी दैदै तारी॥ घाट बाट सबसों अटकत हो लैलै रार उधारी। कहाँ लों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी। जानति करतूति तिहारी॥ मूठि अबीर न डारो दृगन में

टूखैंगी आँख हमारी। नारायन न बहुत इतरावौ छाड़ो डगर गिरधारी। नये भये तुमहीं खिलारी॥

होली पीलू ताल जत।

कान्हा मोंसों होरी में करत बरजोरी रे। श्री-वृन्द्रावन की कुञ्जगलिन में, बचत न कोउ कौनों खोरी रे॥ बरबस धरि २ गरवा लगावै मोको, अबिर मलत झकझोरी रे॥ कहै मारकंडे कैसे निबुकों सँवलिया, अबहीं उमिरिया की थोरी रे॥

होरी ठुमरी।

येरी दैया मैं काह कहूँ छलिया मोहि छलि गयोरी॥ फेंट गुलाल हाथ पिचुकारी ग्वालबाल सब दैकर तारी, घूँघटपट टारि टारि रोरी मुख मलि गयोरी॥ गारी गावत डंफ बजावत आप नचत औ सखन नचावत, कर मरोरि मुख चूमि चूमि चञ्चल कहुं चलि गयोरी॥ ऐसो ढीठ बरजो नहिं मानै कोटिन कान्ह कुटिलपन ठानै, देखो गोइयां इन बातन तें जियरा जलि बलि गयोरी॥ जो सखि मैं वाको धरि पाऊँ मनभाई कर नाच नचाऊँ, क्या कहूँ मोहनलाल लाल मेरे कर सों निकलि गयोरी॥ १२५॥

लावनी।

सखि छलिया छलकर छैल नन्द को राती। कित गयो बयो बिष-बेल हाय पछताती॥ बन बीर बड़े बेपीर अहीर की जाती। सब ढूँढ़त ब्रज की बाल बिरहमदमाती॥ १॥ चौमासा रहकर बास नयन बरसाती। सखि पिय सों कीन्यों मान सोई फल पाती॥ बिन देखि नन्द के लाल नींद नहिं आती। सब ढूँढ़त ब्रज की बाल बिरह-मदमाती॥ २॥ सखि रूप जवानी भरी रहत अठिलाती। नूपुर नगार के जोर सजन लल-चाती॥ सखी घरी पहर की बात कहत सकु-चाती। सब ढूंढ़त ब्रज की बाल बिरहमदमाती॥ मैं जानी नहिं गोपाललाल गति घाती। हरि हो गये अन्तरध्यान बज्र कर छाती॥ मिले स्याम-सखि नँदलाल हरषि बहु भाँती। सब ढूंढ़त व्रज की बाल बिरह मदमाती॥ ४॥ १२६॥

राग कल्याण।

काहे कोई परदेसी की बात॥ वहि द्रुमलता वही कुञ्जनबन वहि तरुवर वहि पात। जब से श्याम गये मधुबन कों नहिं कोउ आवत जात॥

मन्दिर अर्ध अवधि हरि बदि गये हरि-अहार चलि जात। अजया-भख अनुसारत नाहीं कैसे कै दिवस सिरात॥ ससिरिपु वर्ष भानुरिपु युग भरि हररिपु कीन्हों घात। नखत बेद ग्रह जोरि अर्ध करि सोई बनै अब खात॥ मघ पंचक लै गयो सांवरो ताते जिय अकुलात। सूर श्याम बिनु बिकल राधिका कर मींजत पछितात॥ १२७॥

मलार।

सखी इन नैनन तें घन हारे। बिनहीं रितु बरषत निस बासर सदा मलिन दोउ तारे॥ ऊरध स्वास समीर तेज अति सुख अनंग द्रुम डारे। दिसन दसन करि बसे बचन खग दुख पावस के मारे॥ ढुरि ढुरि बूंद परत कंचुकि पर मिलि २ अञ्जन कारे। मानो परनकुटी शिव कीनी बिबिधि रूप धरि न्यारे॥ सुमिरि २ गरजत जल छाँड़त आँसु सलिल के धारे। बूड़त ब्रजहि सूर को राखो बिन गिरवरधर प्यारे॥

मलार।

आज कहुँ कूकत री बन मोर, करत पपीहा सोर॥ चपला चमकि २ डरपावत, चलत पवन

झकझोर। जित तित इन्द्रबधू बहु डोलैं, श्याम घटा चहुँओर ॥ सूनी सेज नींद नहिं आवत, रहि २ उठत मरोर। हाय दई कबधों घर ऐहैं, लाल पिया चितचोर ॥ १२९ ॥

मलार।

चहुँदिसि घन गरजत डरपावत। घन घमण्ड महि तक नियराने श्याम नजर नहिं आवत ॥ कब देखब नैनन ते प्रभु को सोच अधिक उर छावत। अँधियारी भई भानु छिपित भये बुन्द गगन झरि लावत ॥ दामिनि दमकि दरद उर महँ अति दादुर विरह जगावत। बिश्वरूप सुखसिन्धु बिना हरि को जग माहिँ बचावत ॥

मलार।

नयनवन रहत न एक घरी। कबहुं न घटत सदा पावस यह लागिये रहत झरी ॥ बिरह इन्द्र बरसावत निसि दिन ब्रज पर अधिक करी। ऊरध स्वास समीर तेज जल उर भुवि उमगि भरी॥ बूड़त भुजा रोम द्रुम अम्बर अरु कुच उच्च धरी। चलि न सकत पग पथिक रहे थकि चन्दन कीच खरी ॥ रस ऋतु मिटीं भई सब एकै यह बिधि

उलटि परी। सूर श्याम प्रभु तुमरे मिलन बिन ऋतु मरजाद टरी ॥ १३१ ॥

मलार।

निसि दिन बरषत नयन हमारे। सदा रहत बरषा ऋतुं हम घर जबतें श्याम सिधारे ॥ अञ्जन नयन बहत निसि बासर कर कपोल भये कारे। कंचुकिपट सूखत नहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे ॥ ऐसी सिथिल सबै भई काया पल न जात रिसि टारे। सूरदास प्रभु यही कठिन दुख गोकुल काहि बिसारे ॥ १३२ ॥

देस।

सखी री बादरवा घिरि आये। उमड़ि घुमड़ि घहरात घोरघन सुधि बिरहिन तरसाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोइल शब्द सुनाये। दामिनि दमकै बादर गरजै पिय परदेस सिधाये ॥ हम धन तरसत तुव दरसन को तुम बिन को हिय लाये। रामप्रताप कहै सुनु सजनी कोउ सौतिन बिरमाये ॥ १३३ ॥

मलार।

सखीं री श्यामघटा जुरि आई ॥ उमड़ि

घुमड़ि घन गरजत आवत पवन चलत पुरुवाई। दामिनि दमकि २ डरपावत निसि अँधियारी छाई॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोइल कूक सुनाई। हरित भूमि चहुँओर सुहावनि शोभा बरनि न जाई॥ एक श्याम ब्रजबास तजे ते ये सब भे दुखदाई। हे ब्रजराज बेग सुधि लीजै और न आन उपाई॥ दीनानाथ भक्तहितकारी क्यों नहिं करत सहाई। रामप्रताप स्याम के चेरे स्याम स्याम रट लाई॥ १३४॥

देस ठुमरी छपका।

सारी राति गई नहिं सोई गोइयाँ॥ बिरह की मारी आंखि न सूझै भूख प्यास तन खोई गोइयाँ। दैव करे पिय बिरह न व्यापै जासों यह दुख होई गोइयाँ॥ स्यामसखे पछितात बिरहिनी छिनक हँसै छिन रोई गोइयाँ॥ १३५॥

खमाच।

सजन मुखड़ा दिखला जा रे, तेरे दरसन को तरसें हैं नयन॥ बालपन की लागी लगन छूटत नाहीं करो कोटि जतन, दिखला जा सूरत मनमोहन जरा बँसिया बजा जा रे॥ ढूंढ़

फिरी सारा बन २ में तौऊ न पाये नन्द के नन्दन, बिरमाय रखे काह्न सौतिन रसिया महराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब काढ़ि उतारे भूषण बसन, तेरे कारन मैं भई जोगिन कुल की तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हम पै अब माफ़ करो तुम नन्द के नन्दन, श्रीधर पिया आज जलदी मोहि गरवा लगा जा रे ॥

ठुमरी।

बिन श्याम के सूनी नागरिया, अब कोऊ न रोकत डागरिया ॥ जब मैं जात जल भरन जमुन कों, फोरत मोरी गागरिया ॥ रात बिरात कबहुं जब आवत, जागत मोरी भागरिया ॥ नयनन सों जल धार बहतु है बूड़त, व्रज की नागरिया ॥ मानसिंह प्रभु बांह गही अब, डूबि मरब नहिं सागरिया ॥ १३७ ॥

राग बिहागु।

मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हर लियो माधुरी मूरति निरखि नयन की कोर ॥ पकरे हुते आनि उर अन्तर प्रेम प्रीति के जोर। गये छुड़ाय तोड़ि सब बन्धन दै गये हसन चकोर ॥

उचक परों जागत निसि बीती तारे गिनत भइ भोर। सूरदास प्रभु हति मन मेरो सरबस ले गयो नन्दकिशोर ॥ १३८ ॥

खेमटा।

रे निरमोहिया छबि दरसाय जा। कान चाह की श्याम बिरह घन मुरली मधुर बजाय जा ॥ ललितकिशोरी नयन चकोरन दुति मुख-चन्द दिखाय जा। भयो चहत यह प्राण बटोही रूसे पथिक मनाय जा ॥ १३९ ॥

कवित्त।

हूल सम लागै फूल सूल सी सुबास लागै बाग लागै बाघ सों तड़ाग लागै डाग सो। भनत कबिन्द मृगमद लागै करद सी खान पान बान सो दुकूल देह दाग सो ॥ प्यारे की वियोग ते वि-हाल यों निहारी बाल बोलत मराल सोऊ लागै कूर काग सो। चन्द लागै चिता सों अँगार सो अगर लागै घर लागै गर सो नगर लागै नाग सो ॥

भैरवी।

जाजा रे भँवरा दूरदूर। तेरो सो अङ्ग रङ्ग है उनको जिन मेरो चित कियो चूरचूर। जब लग

तरुन फूल महकत है तवलगि रहत हजूर जूर। सूर स्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली रस घूरघूर॥

राग बढ़न्स।

हो गये श्याम दूज के चन्दा॥ मधुबन जाय भये मधुबनियां हम पर डारि प्रेम को फन्दा॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर अब तो नेह पस्यो कछु मन्दा॥

राग जङ्गला।

स्यामसुंदर मनमोहनी मूरति सुन्दर रूप उजारी रे॥ चरण कमल पिंडरी जंघन पर सोहत कटि लचकारी रे। नाभि गँभीर हृदै अति कोमल कृपासिन्धु बनवारी रे॥ भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरधारी रे। ग्रीव चिबुक मृदु हँसनि मनोहर हौं लखि छवि बलिहारी रे॥ नासा नयन भौंह अति बाँकी जिन मोही ब्रजनारी रे। श्रवन कपोलन पर छूटी वे नागिन लट बलदारी रे॥ भाल विशाल पेच सिर जूड़ा मुकुट झुकन सुखकारी रे। जुगलकिशोर मोरपखधारी अब क्यों सुरत बिसारी रे॥

राग देस।

नारीया न जाने वैदा निपट अनारी रे। बूटी

सब झूटी परी औषध नकारी रे। जाओ वैद्य घर अपने को मुझे पीर भारी रे। जमुना किनारे ठाढ़ी ओढ़े कसूमी सारी नन्द जू के ढोटा मोहि नयना भर मारी रे। श्रीगोकुल में वैद बसत है वाही को बुलाय के दिखाओ मेरी नारी रे। पुरुषोतम प्रभु वैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे॥ १४४॥

पुरबो।

नान्हे पिया मोरे गैलें बिदेसवाँ, हमरे फुटि गैलें जोबना के भाग रे॥ सब धन घर २ खिलैखों फगुअवा, हम तलफीला निसि जाग रे। कहै मारकण्डे सब के ऐलें बलमुआ, हम धन उड़-इला काग रे॥ १४५॥

पुरबो।

हुलसि २ हिया होत सबेरी, मोरे आँगन बोलत काग रे। जैसे सुत उठलिउँ फरके बाइँ अँखिया, उमगल आवै अनुराग रे। पोथिया लिहलि दुइ बाम्हन अइलैं, बरत दिखाय गैलें आग रे। कहै मारकण्डे आज ऐहैं बलमुआ, हमरे जोबनवाँ के भाग रे॥ १४६॥

पुरबी।

जदुवा लागल हो रामा, सैयाँ मोरा गइलैं हो पुरुबवाँ। आपु न आवै खबरियो न भेजै, सवत रस पागल हो रामा॥ जारौं बँगालिन तोहरी सुरतिया मिलत जौं माँगल हो रामा। कहत रसीले जियत, कैसि छूटै सेंदुर के दागल हो रामा॥

चौमासा पुरबी।

आये नहीं पिय छाये बिदेसवां कैसि कटै चौमास रे॥ लागे असाढ़ चलै पुरवाई हमरे पिया नहिं पास रे। उमड़ि घुमड़ि घन गरजन लागे बिन पिय जियरा उदास रे॥ बर्षत मेघ चमकि रहि दामिनि लागत सावन मास रे। झूलत हिंडोल सबै ब्रजबाला बिन पिय हमहिं निरास रे॥ भादों में रैन अँधेरी सनकै बिरहिन लेत उसास रे। ऐसी समै पिय सुधि बिसराये नैनन मरत पिआस रे॥ वर्षा बितीत भई बिन माधौ छारहि फूलि काँस रे। कहै सुभकरन मिलौ गिरधारी निसदिन इहई हुलास रे॥ १४८॥

खेमटा।

स्याम गोइयाँ छिया बिच कारकै। मोर मुकट

मकराकृत कुण्डल बाँका हरन मन हरकै॥ काह करों कौने विधि पावों बावाँ नयन मेरो फरकै॥ कहत रसीलि बयस लड़िकइयाँ सास ननद डर बरकै॥ १४९॥ खेमटा।

तरसै जियरा दरस बिनु बालम। दामिन दमकै रैन अँधेरी जोर जनावै जोबनवाँ जालम॥ सूनी सेज जिय धड़कत उन बिन कहत रसीले जवानी का आलम॥ १५०॥

विहाग।

ऊधो ब्रज को गमन करो। मेरे बिना विरहनी गोपिका तिनके दुक्ख हरो॥ जोग ज्ञान परबोध सभन को ज्यों सुख पावें नार। पूरण ब्रह्म अलख परचो कर मोहि बिसारैं डार॥ सखा प्रवीन हमारे हौ तुम याते थाप महन्त। सूर श्याम कारन यह पठवत ह्वै आवैगो सन्त॥

राग वैराग।

मधुकर लाये योग सँदेस॥ करि उर कठिन लिख्यो ब्रजनायक सुनि २ होत अँदेस। चन्दन तज्ञ तन छार लगाओ जटा बाँधि सिर केस॥ तजि आगार बसौ कानन चल धरो बाम मुनि

भेस। रानी भई कन्स की दासी ह्वै गये कृष्ण नरेस॥ तुम ऊधौ मन्त्री ह्वै धाये करन योग उपदेस। सूरश्याम अब हरि मिलाप की आस रही नहिं लेस॥ राग देस।

श्याम को सँदेसा ऊधो पाती लैके आयो रे॥ पाती तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी घूँघट की ओट दै के ऊधो समुझायो रे॥ बसदी उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहि न सोहायो रे॥ सूरश्याम जू के आगे ऐसी जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे॥ १५३॥

ताल धीमा तिताला।

ऊधो धन तुमरो व्यवहार। धन वे साहु धन्य तुम सेवक धन हम बरतनहार॥ काटत आम बबूल लगावत चन्दन खेत उजार। हमको जोग भोग कुबजा को ऐसी समुझ तिहार॥ साहुन बाँधत चोरन छोड़त चुगलन को अधिकार। हंस मयूर शुका पिक त्यागत कागन को इतबार॥ तुम हरि पढ़े चातुरी विद्या निपट कपट चटसार। सूरदास प्रभु कैसे निबहै अन्धधुन्ध सरकार॥

राग नट ।

मधुकर निकसत नाहीं खाँस ॥ रटत नाम मनमोहन निसिदिन बैठ गई मम भाँस । तिथि परमान अवधि आवन की बीते द्वादस माँस ॥ जान अनाथ नाथ बिन हमको देत मनोभव ताँस । कीकीपच मुकुट दृग अटको उर अटकी मृदु हाँस ॥ चितवन वक्र न भूलत मन सों परी प्रेम गर फाँस । सूर श्याम नहिं आवत हरि व्रज गहे कौन धौं गाँस ॥ १५५ ॥

राग केदारी ।

मधुकर इतने हो गये दीन ॥ कम्बु कपोत कुन्द पीरहर हिमकर अधिक मलीन । दाड़िम बिम्ब प्रवाल कीर मृग कञ्जन खञ्जन मीन ॥ चम्पा कनक मराल सरासन सायक अति बल-हीन । श्रीफल कदलि मृनाल कोकिला व्याल महा छबि छीन ॥ रूप कुरूप भयौ हमरो तन सुनु ऊधो परवीन । सूर श्याम मनमोहन जब से मधुपुर गमन करीन ॥ १५६ ॥

राग मारू ।

ऊधो काल चाल औ रासी । मन हरि मदन-

गोपाल हमारी बोलत बोल उदासी ॥ एते पर हम योग करहिं क्यों अविगति है अबिनासी । गुप्त गोपाल करी बनलीला हम लूटी सुखरासी॥ लोचन उमगि चलत हरि के हित बिन देखे बरिसा सी। रसना सूर श्याम के रस बिन चातकहू ते प्यासी ॥

राग सोरठ ।

ऊधो श्याम बिनोदी रे मधुबनियाँ। अब हरि गोकुल काहे को आवहिं चाहत नवयौवनियाँ॥ वे दिन माधव भूलि बिसरि गये गोद खिलाये कनियाँ। गुहि २ देते नन्द यसोदा तनक काँच के मनियाँ ॥ दिना चार ते पहिरन सीखे पट पीताम्बर तनियाँ। सूर श्याम प्रभु तजी कामरी अब हरि भये चिकनियाँ ॥ १५८ ॥

कलिङ्गड़ा ।

हरि सों जाय कहिउ बिरहिन की। करु सोइ जतन बेग पिय प्यारे शूल मिटे मन मैन दहन की॥ ऐसे कठिन भये नँदनन्दन सुधि भूली ब्रज लोग चहन की। नारी ब्रज गँवारि कर त्यागी कुबजा भई पटरानी मोहन की ॥ निसिदिन मदन बैर अब ठान्यो कौन आस है प्रान रहन

की। तापर तुम बैराग सिखावत बलिहारी मुख बैन कहन की ॥ रीत प्रतीत सबै हम जानी कीन्हीं प्रीत भली निबहन की। हरिबिलास हरि तजि निठुराई लाज करो कछु बाँह गहन की ॥

ताल धीमा तिताला।

कुबजा ने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा रे। निसदिन चलत रहत नहिं राखे इन नैनन जल धारा रे ॥ अब यह प्रान कैसे हम राखैं बिछुरे प्रान हमारा रे। ऊधो तब ते कल न परत है जब ते श्याम सिधारा रे ॥ अब तौ मधुबन जाय लै आवो सुन्दर नन्द दुलारा रे। सूर श्याम प्रभु आनि मिलाओ तन मन धन सब वारा रे ॥

रेख़ता।

बेवफ़ाई क्या कहूँ मैं श्याम गुलरू यार की।
हम से ख़ामोशी करै कुब्जा से बातें प्यार की ॥
अब हमैं दरवेश होने को हुकुमनामा लिखा।
मुन्सफ़ी क्या ख़ूब देखी दौलते दरबार की ॥
फ़ुर्क़ते जाना में गो दिल को नहीं होशोहवास।
पर अभी हसरत है बाक़ी माहरुख़ दीदार की ॥
दम पदम है दम तड़पता देखि बिन उस्की अदा।

ऐ तबीबो दो जहाँ अब ले ख़बर बीमार की ॥
नन्द के फ़र्ज़न्द से अब जा कहो यों हरिबिलास।
अब तो वे बातें निबाहैं क़ौल औ इक़रार की ॥

रेखता।

ऊधो ऐसी जाय कहियो जिस तरह आवैं गोपाल।
दिल मेरा बेदिल हुआ है देखे बिन प्यारे जमाल ॥
एक दम बाक़ी रहा है ताब तन में है नहीं ।
श्याम बिन कैसे जियेंगी बेक़रारी है कमाल ॥
हमको सहरा में नचाया शर्म सब जाती रही।
चाहे अब योगिन बनावैं हम फँसी उलफ़त के जाल॥
बेवफ़ाई छोड़ दिल्बर रहमदिल भी हो ज़रा ।
हो चुकीं हम इश्क़ में तेरे बहुत अब पायमाल॥
अर्ज़ यह कहियो हमारी मिन्नतें कर हरिबिलास।
भर नज़र अब आय देखैं गोपियाँ कैसी बेहाल ॥

बारहमासी छन्द हरिगीत।

सावन सुहावन मोर नाचै कूक सुनि छाती फटै। घनघोर सोर कठोर गरजै रैन चातिक बहु रटै ॥ ऐसे भये बेपीर पीतम प्रीति सुधि कछु ना रही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ १ ॥ भादों भलो मन

भावती हरि भोग कुबजा को दियो। बन रास केलि बिसारि मोहन विरहिनी हमको कियो॥ घन झमक झर चहुँओर बरसत निरखि दृग देही दही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम-पदपङ्कज गही ॥ २ ॥ अब क्वार नाहिं सम्हार काह्न कुमुदि सर बिकसी भली। जमुना सलिल सित पुलिन रमनी बिमल नभ चाँदनि खिली॥ मन मथत मनमथ सरद निसि लखि श्याम बिन धीरज नहीं। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम-पदपङ्कज गही ॥३॥ कातिक करत पूजन सबै हम गौरि शिव विश्वेश्वरी। कर जोरि सब बर-दान माँगत पाऊँ मूरति साँवरी ॥ अब त्यागि मधुपुर ब्रजं पधारैं और कछु नाहीं चही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥४॥ अगहन सँदेस बिदेस माधो रहत हम नित बावरी। सब लाज काज बिसारि हेरत पन्थ निसिदिन साँवरी ॥ सुधि करत हम पटहरन लीला नैन जलधारा बही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ ५ ॥ हिम पूस हमरो तन कँपावत श्याम मधुपुर को गये।

उन प्रीति करि अनरीति कीन्हीं कूबरी के बस भये ॥ मन बिबस करि बिरहा दियो हरि नेह को बदला यही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ ६ ॥ अब माघ मास बसन्त आयो कान्त बिन कछु ना बने। ब्रज नारि जानि गँवारि त्यागी चेरि सँग आनंद घने ॥ कारेन को बिश्वास-बारन वेद बुध कबिजन कही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपद-पङ्कज गही ॥७॥ भल मास फागुन योग फगुआ आय ऊधो तुम दियो। अब अधिक कहि वैराग कीजे श्याम रँग मन रँग लियो ॥ ब्रजग्वाल बाल गुलाल खेलत भस्म सब युवतिन लही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ ८ ॥ लखि चैत कानन विटप फूले हरित पल्लवयुत नये। जिमि बिरह अङ्कुर हम हृदै बहु फूल दुख फूलत भये ॥ करि कपट हरि मथुरा सिधारे सूल उर तब तें सही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम-पदपङ्कज गही ॥९॥ वैशाख मास निरास कीन्हों नंदनन्दन साँवरे। नित याम आठो कामबस हम बाम अति मन बावरे ॥ भूलत नहीं अब

चरित ऊधो दान मिस लीन्हीं दही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥१०॥ अति जेठ ज्वाल प्रचण्ड मारुत मार दाहत देह को। जग प्रीति सम सङ्कट नहीं नाती अनोखो नेह को ॥ मन धीर मोहि आवै जबै यदुवीर छवि देखौं वही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ ११ ॥ लागी असाढ़ घमण्ड चहुँदिसि घुमड़ि घन गरजन लगे। लखि दमक दामिनि त्रिबिधि बायू त्रियन मन मनसिज जगे॥ अब हरिबिलास हुलास कीजै आय बृन्दाबन मही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपदपङ्कज गही ॥ १२ ॥ १६३ ॥

रेखता ।

मेरे नामा को ऊधो जी कन्हैया जी को जा देना। हमारी बन्दगी कहना अदब से सर झुका देना ॥ हमें तो तज गये मोहन भये कुब्जा के जा गोहन। ख़ता हमसे हुई है कौन मौक़: से चता देना॥ कहूँ क्या हाल अपना आप आँखों देखि जाते हैं। जिगर का ख़ून जलता है ज़बानी यह सुना देना ॥ पठाई योग की पाती बँचाई

सुन दही छाती। रसिक रस की जी है प्यासी हलाहल है पिला देना॥ नहीं जाना कि हैं ऐसे दिखाकर दाम को दाना। फंसाया धर के फन्दे में व आख़िर को दग़ा देना॥ अबस रुसवा किया हमको गँवाई लाज कुल जीकी। मुनासिब था नहीं उन्को यह नाहक़ की सज़ा देना॥ जसोदा जी की दिल्दारी अयाँ है बिर्ज में सारी। कहाँ है ऐसी महतारी भला कब है भुला देना॥ सुना कान्हा भये त्यागी लिया है योग बैरागी। कुब-रिया कान में लागी उसे जल्दी हटा देना॥ क़लम आरी है लिखने से ज़ुबाँ माज़ूर कहने से। फ़िदा की ग़र्ज़ मिलने से कन्हैया को मिला देना॥

भैरव।

कोउ ब्रज बाँचत नाहीं पाती। कत लिखि २ पठवत नँदनन्दन कठिन बिरह की काती॥ नयन सजल कोमल अति कागद कर अँगुरी अति ताती। परसे जरे बिलोके भींजे दुहूँ भाँति फटि जाती॥ को बाँचै यह रंग सूर प्रभु कठिन मदन शरघाती। सब सुख लै गो श्याम मनोहर हम को दै दुख थाती॥ १६५॥

गज़ल।

रोते २ हमको ऊधो इक ज़माना हो गया। ख़्वाब मुझको कृष्ण का तशरीफ़ लाना हो गया॥ वाह रे तेरी मुहब्बत की सज़ा कैसी मिली। ऐश के बदले हमें आँसू बहाना हो गया॥ नाम तक भी हम सभों का उन्को याद आता नहीं। इस्क़द्र कुबरी सि उन्से दोस्ताना हो गया॥ हम वियोगिन को भला योगिन बनाने आये तुम। क्यों रे ऊधो तू ज़ईफ़ी में दिवाना हो गया॥ रहम कर ब्रज में कभी आवोगे ऐ बनवारीलाल। वरन: सबका जान जाने का ठिकाना हो गया॥

होरी।

कहियो री यह अरज हमारी॥ कहि न जात बिछुरन की वेदन सहि न जात दुख भारी। उठत कराहि आहि कर बैठत बिरह अगिनि तन जारी। पीर नहिँ जात सम्हारी॥ छिन आँगन छिन भीतर बाहर छिन २ चढ़त अटारी। छिन अकुलाय हाथ गहि मीजत का तकसीर हमारी। श्याम सुधि मोरि बिसारी॥ भूलि असन बसन सब बिसरे छूटि गई तन सारी।

दूनी पीर भई उर अन्तर सूनी सेज हमारी । मनो नागिन सी कारी ॥ निसि दिन व्याकुल रहत राधिका चात्रिक की अनुहारी । सूरस्याम जल बरसि जुड़ाओ यही अरज हमारी । श्याम बलिहारी तुमारी ॥ १६७ ॥

कबित्त ।

सकल सुहाग फाग राग बन बाग जात गर्बिन सों गर्ब जात क्रोध जात कोही सों । गृह अनुराग जात बन्धुजन त्याग जात प्रेम मन पागि जात छोह जात छोही सों ॥ आपनी व्यथा की कथा कहाँ लों बखानों बीर और सब होत पै न प्राण जात जी ही सों । उर सों न दाग जात सब सुख भाग जात जब मन लाग जात काहू निरमोही सों॥

कजली ।

प्रितिया रे लगाके कान्हा गैले परदेसवाँ रामा, अजहूँ नाहीं लिहले मोरि सुरतिया रे हरी ॥ बटिया रे जोहत मोरी बितली उमिरिया रामा, असवा रे लगाके दगवा दिहले रे हरी ॥ पतिया रे पठा के पिछली प्रितिया रे जगौले रामा, बुझली रे अगिनियां फिर सुलगौले रे हरी ॥

वँसिया रे बजाके कान्हा जियरा तरसौले रामा, हरिजन से सनेहिया झूठी लौलि रे हरी॥१६९॥

कजली।

घेरि घेरि आवै घटा कारी रे बुँदेलवा॥ दमकि २ दामिनि डेरवावै, पपिहा पुकारै डारी डारी रे बुँदेलवा॥ यह सावन बिन श्याम न भावै, मारै बिरह कटारी रे बुँदेलवा॥ कहत रसीले पिय मधुवन छाये, कासे कहौं अपनी लचारी रे बुँदेलवा॥ १७०॥

कजली।

काहे मोरी सुधि बिसराये रे बिदेसिया। तड़पि २ दिन रैन गँवाऊँ काहे मोसे नेहिया लगाये रे बिदेसिया॥ आप तो कुबरी के प्रेम भुलाये मोहि लिखि योग पठाये रे बिदेसिया। कहै बेनीराम लाये प्रेम कटरिया ऊधोजी को ज्ञान भुलाये रे बिदेसिया॥ १७१॥

कजली।

काहे मोसे जियरा लगाये बाँके मोहना। करिके प्रीति हमको तजि दीना मथुरा नगरिया में छाये बाँके मोहना॥ जब से गये सैयाँ सुधिहु

न लीनी कुबजा सवतिया बनाये बाँके मोहना। जमुनातट बंसीबट गोकुल ब्रन्दाबन बिसराये बाँके मोहना॥ वा दिन की सुध भूल गई सब दान मांगि दधि खायि बाँके मोहना। सावन मास घटा घन गरजे बिजुली चमकि डरपावे बाँके मोहना॥ भादों में कजरारी बदरिया भमकि २ भार लाये बाँके मोहना। लाल बिहाल भई है ग्वालिन पावस कहवाँ बिताये बाँके मोहना॥१७२॥

कजली।

मेरी गली आजा रे साँवलिया॥ नटवर भेष काछनी काछि, बँसिया बजा जा रे साँवलिया॥ बिरह सतावे चैन नहिं आवे, तपत बुझा जा रे साँवलिया॥ तेरे दरस को जिय तरसतु है, गरवाँ लगा जा रे साँवलिया॥ कहत रसीलि अरज यह मानो, बिरज के राजा रे साँवलिया॥

कजली।

तोके दिल देके रे साँवलिया॥ बदनामी सौतिन कर ताना, परल सहे के रे साँवलिया। बन २ व्याकुल फिरत दिवानी लाज पट फेंके रे साँवलिया॥ हाय खबर कछु कोउ न बतावे

पूछौं मैं जीके रे साँवलिया। कहत रसीले जो-बनवां बेरी करब का लेके रे साँवलिया॥१७४॥

कजली।

बँसिया बजावे रे साँवलिया॥ जब से सुनी निसु नींद न आवै, विरहा सतावे रे साँवलिया॥ खान पान कछु काम न भावै, जिय तरसावै रे साँवलिया॥ कहत रसीले हमैं कलपाये, कवन कल पावै रे साँवलिया॥ १७५॥

कजली।

भुलत छिन नाहीं रे मधुबनवां॥ प्रमुदित मोर कोकिला बोलैं सघन तरु छाहीं रे मधुबनवां। फूले कमल तड़ाग बिलोकि मधुप हरषाहीं रे मधुबनवां। डोलत मन्द सुगन्धित सीतल पौन सदाहीं रे मधुबनवां। स्यामा स्याम जहाँ दोउ विहरैं दिये गलबाहीं रे मधुबनवां। कहत रसीले सुरेस सराहि लजत मन माहीं रे मधुबनवां॥ १७६॥

कजली।

सावन ऐसो हो सोहावन मेघा बरसे झमा-झोर। श्याम घटा छाई चहुंदिसि घन गरजि

रह्यो चहुँओर ॥ कोयल कूक रही कुञ्जन में बोल रह्यो बन मोर। सरद समीर बहै पुरवैया जमुना कर रही सोर॥ सखि सब सावन कजरी गावैं नाचैं मण्डल जोर। झिलिमिलि झूलैं रंग हिंडोला तरसै जियरा मोर॥ सखि अपने २ पीतम सँग विलसैं ब्रज की खोर। हम व्याकुल सगरी निसि हरि बिन तलफि २ हो भोर॥ ए ब्रजनाथ नाथ हरिजन अब विनय करत करजोर। वेग दिखाय बदन विधि पूरो करो मनोरथ मोर॥

कजली।

गरजि २ फेरि ऐले रे बदरवा रामा, रहि २ जियरा मोरा तरसै रे हरी॥ बिजुरी चमाकै झोंकै बहत बयरिया रामा, झीमी २ बुँदिया बारी बरसै रे हरी॥ सोहै ना सेजरिया छनो लागे ना नजरिया रामा, रतिया गुजारत कहर भैलैं रे हरी॥ कवन दिवस अस विधिना दिखैहै रामा, हरिजी के देखिबे भरि नजरिया रे हरी॥ १७८॥

कजली।

हरि बिन जियरा मेरो तरसै सावन बरसै घनाघोर॥ झूमिझूमि नभ बादर आये चहुँदिसि

बोलत मोर। रैन अँधेरी रिमझिम बरसै डरपै जियरा मोर॥ बैठी रैन बिहात सोच में तड़प तड़प ही भोर। पावस बीती जात श्याम अब आवो भवन बहोर॥ आइ श्याम उर सोच मिटाओ लागों पैयां तोर। हरिजन हरिहिं मनाय पाँव परि बिनय करत कर जोर॥ १७९॥

कजली।

हमार जिय डोलै रे आधी रतिया॥ टेर २ झींगुर झनकारैं रहौं केहि को लै रे आधीरतिया। मोर चकोर चहूँदिसि कुञ्जन करत कलोलै रे आधीरतिया। सूनी सेज पर नींद न आवै पपिहा बोलै रे आधीरतिया। सब सखि गावत झुलत हिंडोलवा बजावत ढोलै रे आधीरतिया। कहत रसीले मदन तन डाहै करेजवा छोलै रे आधीरतिया॥ १८०॥

संस्कृत गज़ल।

बसन्तश्चारु आयातो ममानङ्गप्रदीपोऽयम्।
प्रभाते वै प्रवातोऽपि निकुञ्जे भृङ्गगुञ्जोयम्॥
वने काञ्चे पुरे पथ्ये नदीतीरे तमालेऽपि।
गिरौ गोदावरीकूले लसत्यस्मिन् रसालोयम्॥

लसत्कालिन्दिकाकूले कदम्बानां कदम्बेऽपि ।
कलापी कोकिला कूजत्यजस्रं भृङ्गपुञ्जोऽयम् ॥
चलन्मन्दे समीरे हे शुभे वृन्दावने रम्ये ।
लतापत्रान्तरे नक्तं विलीनश्चैत्रचन्द्रोऽयम् ॥
क्व सा रासस्थली पुण्या क्व वै वंशीनिनादोऽपि।
निशा सा क्वास्ति कल्याणी क्व हा मे कृष्णचन्द्रोयम्।
क्व सा राधा क्व सा गोपी क्व वा सा गोकुला रम्या।
क्व वासस्तद्विहङ्गानां क्व वाशा नोप्यनाथेऽयम् ।
सतृष्णा वर्त्तते दीना बिना कृष्णान्तु वृन्दैषा ।
सनाथा द्वारिका जाता विनाथो मोहनः सोयम् ॥

गज़ल ।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदा के हाथ क्या आया। तड़पता छोड़ कर तेग़े क़ज़ा के हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा। भला पूछो कोई उस मह-लक़ा के हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुञ्चये दिल को कभी उसने न आ खोला। गई बालाई बाला उस सबा के हाथ क्या आया ॥ लगाना ख़ून दिल चाहा था मैने उसके पाओं से। वले इस पेशक़दमी से हिना के हाथ क्या आया ॥ फिरा

शहरों बियाबाँ तालिबे-दीदार नारायण। बिठाया उसको पर्दे में हया के हाथ क्या आया॥

लावनी।

पिया गये परदेस कवन सा देस जहाँ बिलम्हे प्यारे। पी के कारन, सखी मैं ढूँढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ चली सुँदरि रीवाँ झब्बलपुर सागर बूंदी को जाती। मुलक चँदेरी, ग्वालियर पुना सितारा नगिचाती॥ अमरावति गुजरात मालवा बुढ़ानपुर तक नहिं पाती। झाँसी दतिया, ढूँढ़ के झन्ना पन्ना पछताती॥ निमच हैदराबाद नागपुर सुरत बम्बई गुलजारे। पी के कारन, सखी मैं ढूँढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ १॥

प्रयाग बाँदा लखनऊ कानपुर चली सुँदरि कम्पू स्याने। कनउज कोयल, फ़रुक्खाबाद कालपी सब जाने॥ मिरट मुरादाबाद भरथपुर सदर आगरा सुन स्याने। दिलि अम्बाला, जलन्धर फगवाड़े भी सब छाने॥ कासमीर करनाल लहाउर क्या काबुल क्या कन्धारे। पी के कारन, सखी मैं ढूंढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ २॥

तख़ जवनपुर टाँड़ा बँगला आयोध्या पहुंचीं नारी। बुटउल बेतिया, जनकपुर आजमगढ़ की तैयारी॥ रामपूर बड़हर गोरखपुर बहराइच बस्ती न्यारी। बाँस बरैली, सु पीलीभीत नूरपुर जा हारी॥ तानसेन नैपाल कबेसर चिन बुटान ढूँढ़ा जा रे। पी के कारन, सखी मैं० ॥ ३ ॥

रामनगर काशी नयनागढ़ गाजीपुर की चली अबला। रसरा छपरा, दिनापुर पटने तक नहीं पता मिला॥ मुंगेर मकसुदाबाद भगलपुर राजमहल जहाँ बना किला। चली बाँकुड़ा, सयदपुर कलकत्ता है पुरुब जिला॥ ढाँका औ बङ्गाल ढूंढ़ के मिले कटकपुरि में प्यारे। पी के कारन, सखी मैं ढूंढ़ फिरी मु० ॥ ४ ॥

हुई मिहर उस रब् की नार पर बहुत दिनों पर मिले सजन। शाहअली हैं, हमारे गुरु हनुमत पर सदा मगन॥ हनूमान का दुर्गा चेला ज़िलों शहर का किया कथन। बृन्दावन में, हैं गाते बेनीराम औ बाँकेधरन॥ मिरजापुर दरम्यान ख्याल यह बबईगिर ने ललकारे। पी के कारन, सखी मैं ढूँढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ ५ ॥

भैरवी ताल जलद ।

मङ्गल आरति श्रीजदुवर की जोति सुहावन राजि । मकराकृतकुण्डल छवि सोहै मुकुटभानु छवि छाजि ॥ माल विशाल लसत मणिगण की पदिक कण्ठ मँह भ्राजि । कटकवलय भूषण छवि छावत चपला घन मँह गाजि ॥ बदन सरोरुह लसत मनोहर कुटिल केस अलि ताजि। हास मनोहर ध्यान करत चित सिद्ध होत सब काजि ॥ ब्रजवनिता बालक परिजन सब साजि सुमंगल साजि । विश्वरूप प्रभु आरति गावत झांझ बितन्त्री बाजि ॥ १८४ ॥

ऐक्ट २० सन् १८४७ के अनुसार इसकी रजिष्टरी हुई है ।

सज्जन दासानुदास ।
लाला भोलानाथ ।
छोटी पियरी—बनारस सिटी ।